मूल्यः 20/–

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष-2, अंक- 5 मई-जून (संयुक्तांक) 2025

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

युद्ध के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारत का एक और कदम- ‘रुद्रास्त्र’

- मेक इन इंडिया का उड़ान–भारत में बनेगा राफेल का फ्यूज़लाज
- भारतीय इंजीनियरिंग का अनोखा, नायाब नमूना है चिनाब ब्रिज
- हैदराबाद में एक शानदार ग्रैंड फिनाले में ओपल सुचाता चुआंगसरी को 72वीं मिस वर्ल्ड का ताज पहनाया गया

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से
हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख
ज्यादा पसंद आया।
क्या कमियां हैं
और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail.com

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–2, अंकः 05 मई–जून (संयुक्तांक)–2025

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार– 800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय

3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

रजि. कार्यालय

3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com
वेबसाइट : www.bolozindagi.com

सभी पद अवैतनिक

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

03

युद्ध के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारत का एक और कदम- 'रुद्रास्त्र'

1. युद्ध विनाशकारी भी, युद्ध जरूरी भी 2
2. अपनी सैन्य क्षमताओं में वृद्धि कर रहा भारत 5
3. भारत की वाटर स्ट्राइक का पाकिस्तान पर असर 8
4. भारतीय इंजीनियरिंग का अनोखा, नायाब नमूना है चिनाब ब्रिज 10
5. मेक इन इंडिया का उड़ान–भारत में बनेगा राफेल का फ्यूजलाज 12
6. आतंक पर भारी है–बाड़मेर–सिंध बॉर्डर पर हिन्दू–मुस्लिम रिश्तों की मिसाल 13
7. हैदराबाद में एक शानदार ग्रैंड फिनाले में ओपल सुचाता चुआंगसरी को 72वीं मिस वर्ल्ड का ताज पहनाया गया 14
8. लहरों के परों पर उड़ान : दमन 16
9. इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम 19
10. 400 साल पुराना है साइकिल का सफरनामा 20
11. कविता : माँ को बदलते देखा 21
12. गीत : तेरे पानी में है खून 21
13. भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों का महत्व 22
14. श्रीमद्भगवद्गीता और नाट्यशास्त्र का यूनेस्को धरोहर में शामिल होना महत्वपूर्ण 24
15. 'विश्व रक्तदाता दिवस' के अवसर पर आई.ए.एस. एसोसिएशन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन 26
16. मलोट (पंजाब) में नई राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन 26
17. शाहरुख खान लंदन में आदित्य चोपड़ा की कम फॉल इन लव–द डीडीएलजे म्यूजिकल रिहर्सल में शामिल हुए 27
18. कभी खत्म नहीं हो रही तलाश की प्रक्रिया 29
19. गर्मियों में बनाएं अलग–अलग फ्लेवर के शीतल पेय 30
20. युद्ध के साये में तिलमिला रही दुनिया 31

युद्ध विनाशकारी भी, युद्ध जरूरी भी

किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी कि देश में दिनदहाड़े पहलगाम जैसी निंदनीय आतंकवादी घटना घटित होगी। ऐसे में सुरक्षा व्यवस्था को लेकर मौजूदा सरकार पर उंगली उठना भी लाजमी था। जब कश्मीर सहित पूरा देश इस घटना से उबलने लगा तो ऐसे में भारत को दुश्मन पड़ोसी देश पाकिस्तान को माकूल जवाब देना भी अति आवश्यक हो गया। लेकिन दुख हुआ कि इस पर भी राजनीति की जाने लगी।

उधर जब भारत सरकार पाकिस्तान के आतंकवादियों को ठोस जवाब देने के लिए गुपचुप तैयारियों में लगी थी, इधर विपक्षी पार्टियां जनता को बहुत वक्त बीतने पर उकसाने लगीं कि यह सरकार सिर्फ बोल बच्चन तक सीमित है, युद्ध से डरती है।

ऐसी परिस्थिति में देश का हर देशभक्त नागरिक दुश्मन देश से बदला लेने को आतुर दिखा। देर से ही सही पूरी तैयारियों के साथ जब भारत ने कूटनीतिक तरीके से वाटर स्ट्राइक के बाद आधी रात को दुश्मन देश में आतंकवादी ठिकानों को नेस्तनाबूद करना शुरू किया तो फिर हर भारतीय का सीना गर्व से ऊंचा हो गया। कुछ दिनों बाद जब दोनों ही देश की तरफ से सीजफायर की घोषणा हुई तो विपक्षी पार्टियों को फिर से जनता को बड़गलाने का अवसर मिल गया कि यह सरकार डर से पीछे हट गई। और फिर तो सोशल मीडिया पर भी पक्ष विपक्ष में आम जनता की प्रतिक्रियाओं की बाढ़ सी आ गई। एक का तर्क कि पाकिस्तान को बर्बाद कर पीओके को कब्जे में ले लेने का सुनहरा अवसर हाथ से निकल गया, वहीं दूसरे पक्ष का तर्क कि युद्ध से किसी का भला नहीं होगा, नुकसान हमारा भी होगा। क्या सच में युद्ध की विभीषिका हमें भी झेलनी पड़ेगी या फिर हमारा देश लंबे वक्त तक अमन चैन की सांसे लेगा यह तो भविष्य के गर्भ में छुपा हुआ है। लेकिन इतना तय है कि आज का भारत बदल चुका है, आज का भारत दुश्मन देश में घुसकर बदला लेनेवाला है, ऐसे में आइंदा किसी भी आतंकी घटना को आज का भारत यूं ही बर्दाश्त तो अब हरगिज नहीं करेगा।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

युद्ध के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारत का एक और कदम- 'रुद्रास्त्र'

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

भारत की रक्षा प्रणाली ने एक और क्रांतिकारी कदम आगे बढ़ाया है। राजस्थान के जैसलमेर जिला के पोकरण फायरिंग रेंज में एक ऐसी तकनीक का सफल परीक्षण हुआ है, जो न केवल देश की सीमाओं को पहले से अधिक सुरक्षित बनाएगा, बल्कि युद्ध के आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारत को एक नई दिशा में भी आगे बढ़ाएगा। यह तकनीक है– हाइब्रिड वीटीओएल यूएवी 'रुद्रास्त्र'।

भारत रक्षा क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' अभियान की सफलता का सबसे दमदार उदाहरण अब "रुद्रास्त्र" के रूप में उभरकर सामने आया है। यह यूएवी (Unmanned Aerial Vehicle) न केवल दुश्मन के छिपे ठिकानों पर हमला करने में सक्षम है, बल्कि यह उसे पूरी तरह से नष्ट कर सकता है। दुश्मन चाहे कितनी भी चतुराई से छिपा हो, रुद्रास्त्र उसकी तलाश करेगा, मंडराएगा और उसे पूरी तरह समाप्त कर देगा। पोकरण की तपती धरती पर हुए इस सफल परीक्षण ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत अब युद्ध के आधुनिक हथियारों के मामले में किसी भी विकसित देश से पीछे नहीं है।

"रुद्रास्त्र" की सबसे बड़ी खासियत है इसकी हाइब्रिड VTOL (Vertical Take&Off and Landing) क्षमता। यानि यह ड्रोन किसी रनवे पर निर्भर नहीं रहता है। वह किसी भी स्थान से सीधा ऊपर उठकर उड़ान भर सकता है और लक्ष्य भेदन कर वापस भी आ सकता है। आधुनिक युद्धों में, जहां त्वरित प्रतिक्रिया और सटीक हमला ही जीत का निर्धारक होता है, वहां इस तरह की तकनीकें गेम चेंजर साबित होती हैं।

यह परीक्षण भारतीय सेना द्वारा निर्धारित मानकों पर किया गया है और जानकारी के अनुसार, "रुद्रास्त्र" हर कसौटी पर पूरी तरह से खरा उतरा है। जिस तरह से इसने सटीकता से लक्ष्य को नष्ट किया और बिना किसी त्रुटि के अपनी लॉन्चिंग साइट पर वापसी की, वह अत्यंत प्रभावशाली था। "रुद्रास्त्र" की उड़ान क्षमता लगभग 1.30 घंटा है और यह लगभग 170 किलोमीटर के दायरे में परिचालन करने में सक्षम है। परीक्षण के दौरान उसने 50 किलोमीटर से अधिक के क्षेत्र को कवर करते हुए मिशन को पूरा किया है और सफलता से लौट आया है।

सबसे विशेष बात यह है कि "रुद्रास्त्र" न केवल निगरानी या जासूसी के लिए प्रयोग में लाया जा सकता है, बल्कि यह हमला करने की भी पूरी क्षमता रखता है। इस यूएवी के साथ एक छोटा बम लगाया गया था, जिसे टेस्टिंग के दौरान मध्य ऊँचाई से छोड़ा गया। जैसे ही यह बम निशाने के पास पहुँचा, यह हवा में ही विस्फोटित हुआ और उसका असर एक बड़े क्षेत्र में देखने को मिला। इसका अर्थ यह हुआ कि "रुद्रास्त्र" न केवल दुश्मन की टोह ले सकता है, बल्कि उसे पूरी तरह समाप्त करने का सामर्थ्य भी रखता है।

रुद्रास्त्र को विकसित करने वाली कंपनी सोलर डिफेंस एंड एयरोस्पेस है, जो एक निजी भारतीय कंपनी है। उल्लेखनीय है कि अब भारत की निजी कंपनियां भी रक्षा उत्पादन में भागीदारी कर रही हैं और अत्याधुनिक तकनीक विकसित कर रही हैं, जो पहले केवल सार्वजनिक क्षेत्र या विदेशी कंपनियों के दायरे में आती थीं। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारत की रक्षा तैयारियां अब आत्मनिर्भरता की ओर तीव्र गति से

अग्रसर हैं।

परीक्षण के दौरान "रुद्रास्त्र" ने यह भी दिखाया कि वह एक ही जगह पर स्थिर रहकर दुश्मन की गतिविधियों पर नजर रख सकता है। इसकी 'हॉवरिंग' क्षमता बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे एक ही क्षेत्र में अधिक देर तक निगरानी किया जा सकता है, जिससे गुप्त ठिकानों की पहचान करना आसान हो जाता है। साथ ही, यह यूएवी वीडियो लिंक से लैस है, जिससे यह रीयल–टाइम में निगरानी और हमले दोनों की क्षमता रखता है।

भारत के लिए "रुद्रास्त्र" केवल एक ड्रोन नहीं है, बल्कि रणनीतिक बदलाव का संकेत है। अब वह युग समाप्त हो रहा है जब भारत रक्षा उपकरणों के लिए अन्य देशों पर निर्भर रहता था। अब देश की रक्षा प्रणाली भारत में ही विकसित हो रही है और वह भी अत्याधुनिक तकनीक के साथ। "रुद्रास्त्र" जैसे यूएवी के आने से सीमा सुरक्षा बलों को वास्तविक समय में दुश्मन की गतिविधियों पर निगाह रखने और आवश्यकता पड़ने पर उसी क्षण जवाबी कार्रवाई करने की शक्ति मिलती है।

इसके अतिरिक्त, युद्ध के समय जब सैनिकों को दुश्मन के इलाके में प्रवेश करने का जोखिम होता है, उस स्थिति में "रुद्रास्त्र" जैसे यूएवी का उपयोग सैनिकों की जान की रक्षा करते हुए दुश्मन पर चोट करने का सर्वोत्तम विकल्प बन सकता है। यह मानव रहित प्रणाली दुश्मन के इलाके में जाकर सटीक बमबारी कर सकता है और सैनिकों को बिना जोखिम के बड़ी सफलता दिला सकता है।

अगर आने वाले वर्षों में "रुद्रास्त्र" को भारतीय सेना में बड़े पैमाने पर शामिल किया जाता है, तो यह सीमा पर तैनात सैनिकों का एक भरोसेमंद हथियार बन सकता है। इसकी बड़ी संख्या में तैनाती के साथ दुश्मन की घुसपैठ की किसी भी कोशिश को पहले ही विफल किया जा सकता है। आतंकवादी ठिकानों, दुर्गम पर्वतीय क्षेत्रों में छिपे दुश्मनों, सीमावर्ती गाँवों में संदिग्ध गतिविधियों, हर मोर्चे पर "रुद्रास्त्र" का उपयोग देश की सुरक्षा में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

इसकी तुलना अगर वैश्विक स्तर पर हो, तो देखा जा सकता है कि अमेरिका, इजरायल और चीन जैसे देश पहले से ही अत्याधुनिक यूएवी का प्रयोग कर रहे हैं। भारत भी अब इस होड़ में शामिल हो चुका है। लेकिन यह "रुद्रास्त्र" न केवल तकनीकी रूप से उन्नत है, बल्कि यह भारतीय भूभाग और जलवायु की जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। यह रेगिस्तान, जंगल, हिमालयी क्षेत्र और शहरी इलाकों, हर तरह की परिस्थिति में आसानी से उड़ सकता है।

भारत की युद्धनीति में अब यह परिवर्तन स्पष्ट दिख रहा है कि अब सीमित संसाधनों से अधिकतम प्रभाव कैसे प्राप्त किया जाए। "रुद्रास्त्र" इस रणनीति का सटीक उदाहरण है। कम लागत, स्वदेशी निर्माण, अत्याधुनिक तकनीक और बहुपयोगिता, यह सभी विशेषताएं इसे भविष्य का ब्रह्मास्त्र बताती हैं।

जहां एक ओर भारत साइबर युद्ध, स्पेस वारफेयर और मिसाइल टेक्नोलॉजी में तेजी से आत्मनिर्भर हो रहा है, वहीं इस तरह का स्वदेशी हाइब्रिड यूएवी देश की रणनीतिक क्षमता में गुणात्मक वृद्धि करेगा। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (DRDO) के सहयोग से अगर ऐसे और हथियार बनाया जाए, तो भारत दुनिया के उन चुनिंदा देशों में शामिल हो सकता है, जो अपनी सेनाओं को आधुनिकतम और पूर्णतः स्वदेशी हथियारों से लैस रखता है।

"रुद्रास्त्र" का यह परीक्षण ऐसे समय पर हुआ है जब भारत की सीमाओं पर सतर्कता और तकनीकी मजबूती की सबसे अधिक आवश्यकता है। चीन और पाकिस्तान की सीमाओं पर लगातार तनाव की स्थिति बनी रहती है। ऐसे में इस तरह की प्रणाली से न केवल सीमाओं पर निगरानी मजबूत होगी, बल्कि देश के भीतर छिपे हुए आतंकवादी नेटवर्क पर भी सटीक और प्रभावी हमला किया जा सकता है।

"रुद्रास्त्र" के परीक्षण की सफलता इस बात का भी प्रतीक है कि भारत अब रक्षा उत्पादन में केवल ग्राहक नहीं, बल्कि निर्माता की भूमिका में आ चुका है। वह दिन दूर नहीं है जब भारत रक्षा उपकरणों का निर्यातक भी बनेगा। अफ्रीका, दक्षिण एशिया और मध्य एशिया जैसे देशों में सुरक्षा की जरूरतें बढ़ रही हैं और भारत इस आवश्यकता को पूरा करने की पूरी क्षमता रखता है।

युवाओं के लिए भी "रुद्रास्त्र" प्रेरणा का स्रोत है। यह दिखाता है कि विज्ञान, तकनीक और नवाचार की शक्ति से भारत रक्षा क्षेत्र में भी वैश्विक मंच पर चमक सकता है। जो युवा आज इंजीनियरिंग, रोबोटिक्स, एआई, एविएशन और डिजाइनिंग की पढ़ाई कर रहे हैं, उनके लिए यह भविष्य की एक रोशनी है। भारत अब रक्षा क्षेत्र में केवल हथियारों का उपभोग करने वाला देश नहीं रहेगा, बल्कि वह उन्हें डिजाइन, निर्मित और निर्यात करने वाला देश बनेगा।

इस परीक्षण ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि निजी कंपनियों की भागीदारी से रक्षा क्षेत्र में अभूतपूर्व तेजी आ सकता है। सरकार को चाहिए कि इस तरह की कंपनियों को और अधिक समर्थन, फंडिंग और अनुसंधान का अवसर प्रदान करे। इससे भारत की सुरक्षा प्रणाली को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सकता है।

"रुद्रास्त्र" केवल एक यूएवी नहीं है, बल्कि यह एक प्रतीक है भारत के आत्मविश्वास का, आत्मनिर्भरता का और आत्मरक्षा के अधिकार का। यह दिखाता है कि भारत अब किसी भी प्रकार की चुनौती से निपटने के लिए तैयार है, चाहे वह सीमा पार से हो या सीमा के अंदर से।

❒

अपनी सैन्य क्षमताओं में वृद्धि कर रहा भारत

✍ **सुनील कुमार महला**
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

भारत अपनी सैन्य क्षमताओं में लगातार वृद्धि कर रहा है। इस क्रम में यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारत और फ्रांस ने हाल ही में राफेल मरीन विमान के ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए हैं और दोनों देशों के रक्षा मंत्रियों ने इस डील को हरी झंडी भी दिखा दी है। गौरतलब है कि आईजीए पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और फ्रांस के सशस्त्र सेना मंत्री सेबास्टियन लेकोर्नु ने हस्ताक्षर किए। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह भारत की फ्रांस के साथ अब तक की सबसे बड़ी डिफेंस डील है, जिसके अंतर्गत भारत, फ्रांस से 26 राफेल मरीन विमान खरीदेगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों देशों (भारत–फ्रांस) के बीच यह डील 63000 करोड़ रुपए में साइन की गई है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस राफेल डील में हथियार, उपकरण, स्पेयर पार्ट्स और क्रू ट्रेनिंग और लॉजिस्टिक सपोर्ट भी शामिल होगा। कहना गलत नहीं होगा कि भारत की फ्रांस से 26 राफेल एम (मरीन) की खरीद के समझौते पर हुए हस्ताक्षर रणनीतिक रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण है। भारत और फ्रांस के बीच जो डील (सौदा) हुआ है उसके मुताबिक भारतीय नौसेना को फ्रांस द्वारा 26 राफेल मरीन फाइटर जेट उपलब्ध कराए जायेंगे, तथा इनमें से 22 फाइटर जेट सिंगल–सीटर होंगे। वहीं, नौसेना को चार ट्विन–सीटर वेरिएंट के ट्रेनिंग राफेल विमानों की डिलीवरी भी दी जाएगी। कहना गलत नहीं होगा कि भारत और फ्रांस के बीच यह सौदा ऐसे समय में हुआ है जब भारत ने आतंकवाद के खिलाफ (पहलगाम हमले के बाद) सख्त रुख अपनाया है, जिसके चलते पाकिस्तान में काफी बैचेनी है। पाकिस्तान इन दिनों नियंत्रण रेखा पर गोलीबारी कर रहा है और भारतीय सेना पाकिस्तान को करारा जवाब दे रही है। इसी बीच भारतीय नौसेना के बेड़े में राफेल विमान शामिल हो जाने से भारत की शक्ति और अधिक बढ़ जाएगी। गौरतलब है यह देश के नौसैनिक बलों के लिए पहला बड़ा लड़ाकू विमान अपग्रेड है। हालाँकि, यह बात अलग है कि अभी इन विमानों की डिलीवरी में कुछ वर्षों का समय लगेगा। जानकारी के अनुसार पहले राफेल (एम) फाइटर जेट की डिलीवरी वर्ष 2028–29 में होगी। इसके बाद वर्ष 2031–32 तक नौसेना को सभी विमानों की आपूर्ति कर दी जाएगी। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इन्हें (राफेल विमानों को) मुख्य रूप से, स्वदेशी रूप से निर्मित विमान वाहक पोत आईएनएस विक्रांत और आईएनएस विक्रमादित्य पर तैनात किए जाएंगे। वास्तव में इन विमानों को युद्ध पोत पर तैनात करने के हिसाब से ही डिजाइन किया गया है तथा फ्रांस की सेना पहले से ही इनका इस्तेमाल कर

रही है। इससे (इस सौदे से) जहां एक ओर भारत हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की गतिविधियों पर नजर रख सकेगा। वहीं, दूसरी ओर भारत पाकिस्तान की हरकतों का भी मुंहतोड़ जवाब और अधिक शक्ति से दे सकेगा। इन विमानों की सहायता से भारत न केवल पाकिस्तान बल्कि पडोसी चीन के नापाक मंसूबों पर भी पानी फेर सकेगा, जैसा कि चीन भी समय समय पर सीमा पर भारत को आंख दिखाता रहता है और घुसपैठ की वारदातों को अंजाम देता रहता है। कहना गलत नहीं होगा कि इससे भारतीय नौसेना की समुद्री हमले की क्षमताओं को और अधिक मजबूती मिल सकेगी। गौरतलब है कि भारतीय वायुसेना के पास भी राफेल विमानों के बेड़े हैं। वास्तव में, भारत के पास पहले से ही 36 राफेल विमान हैं। पाठकों को बताता चलूं कि साल 2016 में ही इन विमानों के लिए फ्रांस की कंपनी के साथ डील हुई थी तथा भारत की फ्रांस के साथ इस नई डील के बाद भारत में राफेल की संख्या बढ़कर 62 हो जाएगी। आज भारत मेक इन इंडिया पर लगातार जोर दे रहा है।

पाठकों को बताता चलूं कि भारत ने पिछले एक दशक में अपनी सैन्य ताकत को अभूतपूर्व ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। श्मेक इन इंडियाश पहल के तहत विकसित किए गए घातक हथियार न केवल भारत की सुरक्षा को मजबूती प्रदान करते हैं, बल्कि पड़ोसी देशों विशेषकर पाकिस्तान और चीन के लिए एक बड़ी चुनौती भी पेश करते हैं। यदि हम यहां पर भारत की स्वदेशी हथियार प्रणालियों की बात करें तो इनमें क्रमशः अग्नि–ट मिसाइल(8,000 किमी तक मार करने की क्षमता), ब्रह्मोस (दुनिया की सबसे तेज सुपरसोनिक मिसाइल), एच एसटीडीवी (7 मैक गति वाली

हाइपरसोनिक मिसाइल), प्रलय मिसाइल (दुश्मन के बंकरों और कमांड सेंटरों के लिए घातक), निर्भय क्रूज मिसाइल (छुपकर हमला करने में माहिर), के–9 वज्र (स्वचालित तोपों का राजा), पिनाका (बारूद की बारिश करने वाला सिस्टम),अर्जुन टैंक (जमीनी युद्ध का विशेषज्ञ), एंटी–सैटेलाइट मिसाइल (अंतरिक्ष में दबदबा) शामिल हैं। कहना गलत नहीं होगा कि आज भारत रक्षा ही नहीं बल्कि हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। आधुनिक हथियारों (अस्त्र–शस्त्र) का निर्माण आज भारत में होने लगा है और भारत इनका निर्यात भी करने लगा है, लेकिन हमारी सैन्य सामग्री की आवश्यकताओं के चलते अब भी अरबों रुपयों की खरीद (हथियारों/विमानों) विदेशों से करना जरूरी है। यही कारण है कि साल 2016 में फ्रांस से 60,000 करोड़ रुपयों में 36 मल्टीरोल राफेल लड़ाकू विमान खरीद लेने के नौ साल बाद अब साल 2025 में भारत ने एक नये रक्षा सौदे के अंतर्गत फ्रांस से ही 26 राफेल एम विमानों की खरीद पर 63,000 करोड़ रुपये खर्च करने का समझौता किया है। वास्तव में, भारतीय पोतों और उनके कार्मिकों की सुरक्षा तथा अंडमान–निकोबार, लक्षद्वीप एवं हजारों मीलों तक फैले तटीय क्षेत्र की सुरक्षा के लिए भारतीय नौसेना की क्षमता में लगातार वृद्धि जरूरी है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि आज की तारीख में दुनिया के नौ देशों के पास परमाणु हथियार हैं और इन नौ देशों में रूस, अमेरिका, चीन, भारत, पाकिस्तान, फ्रांस, यूके, इजराइल और उत्तर कोरिया शामिल हैं। एक प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक में छपी एक खबर के अनुसार ग्लोबल फायरपावर 2025 के अनुसार, दुनिया के 145 शक्तिशाली देशों की सूची में चीन तीसरे स्थान पर है, वहीं भारत का स्थान चौथा है। यहां पर यदि हम आंकड़ों की बात करें तो भारतीय सेना के पास 4201 टैंक हैं। वहीं, चीनी सेना के पास 6800 टैंक हैं। भारतीय सेना के पास 148594 आर्मर्ड व्हीकल हैं। वहीं, चीनी सेना के पास 144017 आर्मर्ड व्हीकल हैं। भारतीय सेना के पास 3975 टो आर्टिलरी हैं। वहीं, चीनी सेना के पास 1000 टो आर्टिलरी हैं। भारतीय सेना के पास 264 रॉकेट लॉन्चर हैं। वहीं, चीनी सेना के पास 2750 रॉकेट

लॉन्चर हैं। भारतीय वायुसेना के पास कुल विमानों की संख्या 2229 है। वहीं, चीनी वायुसेना के कुल विमानों की संख्या 3309 है। हिंदी दैनिक लिखता है कि भारतीय वायुसेना में लड़ाकू विमानों की संख्या 513 है। वहीं, चीनी वायुसेना में लड़ाकू विमानों की संख्या 1212 है। भारतीय वायुसेना में हमलावर विमानों की संख्या 130 है। वहीं, चीनी वायुसेना में हमलावर विमानों की संख्या 371 है। भारतीय नौसेना की फ्लीट स्ट्रेंथ 293 है। वहीं, चीनी नौसेना की फ्लीट स्ट्रेंथ 754 है। भारतीय नौसेना के पास 18 पनडुब्बियां हैं। वहीं, चीनी नौसेना के पास 61 पनडुब्बियां हैं। भारतीय नौसेना के पास 13 विध्वंसक हैं। वहीं, चीनी नौसेना के पास 50 विध्वंसक हैं। जाहिर है कि यह खाई पाटना कोई एकाध दिन की बात नहीं है। भारत को विभिन्न स्तरों पर इसके लिए प्रयास करना है। इस दृष्टि से भारत का फ्रांस से राफेल एम की खरीद का निर्णय सामरिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण व बड़ा कदम है। हम सभी यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि भारत की सैन्य क्षमता पाकिस्तान के मुकाबले पहले से ही बहुत मजबूत है, लेकिन आज की स्थितियों में भारत को अपनी सैन्य क्षमता इसलिए भी बढ़ाने की आवश्यकता है, क्योंकि भारत अनेक मोर्चों पर आज चीन की विस्तारवादी नीतियों और पाकिस्तान की साम्प्रदायिकता मानसिकता की ताकतों का लगातार मुकाबला कर रहा है। उल्लेखनीय है कि हिंद महासागर में चीन की गतिविधियां, विशेष रूप से उसकी नौसैनिक और रणनीतिक उपस्थिति, काफी बढ़ रही हैं। पाठक जानते होंगे कि जब श्रीलंका आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा था, उस समय हंबनटोटा को 99 साल के लिए चीन को पट्टे पर दिए जाने ने यह दिखाया कि बीजिंग किस तरह से बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव को हथियार के रूप में प्रयोग कर रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि चीन को कड़ा संदेश देने की दृष्टि से भी भारत को अत्याधुनिक हथियारों की संख्या बढ़ाने की आज आवश्यकता है। गौरतलब है कि चीन म्यांमार में क्यौकप्यू में एक गहरे समुद्र बंदरगाह का निर्माण कर रहा है। यह परियोजना भारत के लिए एक रणनीतिक चिंता का विषय है क्योंकि यह चीन के श्मोतियों की मालाश रणनीति के तहत बनाई जा रही है, जिसका उद्देश्य भारत को घेरना है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि मोतियों की माला के तहत चीन भारत के आसपास के देशों में बंदरगाहों का निर्माण कर रहा है। यह भी उल्लेखनीय है कि चीन पहले ही पाकिस्तान के ग्वादर बंदरगाह में निवेश कर चुका है। इतना ही नहीं, चीन द्वारा मालदीव के मराओ अटोल में भी बंदरगाह का निर्माण किया गया है। कहना गलत नहीं होगा कि इससे चीनी नौसेना की उपस्थिति से भारत की तटीय सुरक्षा पर कहीं न कहीं चिंता पैदा हुई है। अतः वर्तमान में भारत की फ्रांस के साथ यह राफेल डील बहुत ही महत्वपूर्ण और जरूरी थी। निश्चित ही इस डील से भारत रक्षा के क्षेत्र में चीन और पाकिस्तान को कड़ी टक्कर (यदि जरूरत पड़ती है तो) दे सकेगा। हालांकि भारत हमेशा शांति, संयम और सौहार्द को तवज्जो देता आया है और वह पंचशील के सिद्धांतों (एक–दूसरे की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता का सम्मान करना, आक्रामक कार्रवाई से बचना, एक–दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता और पारस्परिक लाभ की नीति तथा शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व) में विश्वास करता है। ❒

भारत की वाटर स्ट्राइक का पाकिस्तान पर असर

✍ **सुनील कुमार महला**
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

जम्मू–कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमले के बाद भारत ने सिंधु जल संधि को स्थगित करने के बाद अब चिनाब नदी पर बने बगलिहार बांध के माध्यम से पानी के प्रवाह को रोक दिया है। वास्तव में कूटनीतिक तौर पर पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए भारत की ओर से उठाया गया यह सबसे बड़ा कदम माना जा रहा है। अब पाकिस्तान को निश्चित ही इससे सबक मिल सकेगा। कहना गलत नहीं होगा कि भारत की ओर की गई यह वाटर स्ट्राइक पाकिस्तान को बुरी तरह से तोड़ कर रख देगी। इतना ही नहीं, सूत्रों के हवाले से यह भी सामने आ रहा है कि भारत झेलम नदी पर बने किशनगंगा बांध को लेकर भी इसी तरह के कदम उठाने की योजना बना रहा है। हाल फिलहाल चिनाब प्रवाह को रोकने से एक ओर जहां पर पाकिस्तान का कृषि उत्पादन और बिजली बनाने की क्षमता प्रभावित होगी, वहीं दूसरी ओर पाकिस्तान में इससे पीने के पानी की समस्या पैदा होगी तथा अनेक लोगों की आजीविका भी संकट में आ जाएगी। दरअसल, पाकिस्तान की लगभग 80% से अधिक कृषि भूमि सिंधु, झेलम और चिनाब नदियों पर ही निर्भर है। सिंधु नदी प्रणाली से उसे कुल मिलाकर 93% पानी मिलता है, जिसका वह उपयोग खेती, पीने के पानी और बिजली उत्पादन के लिए करता है। ऐसे में भारत द्वारा पानी रोकने का फैसला पाकिस्तान के लिए बहुत बड़ा झटका है। दूसरे शब्दों में कहें तो पाकिस्तान की जल–आधारित अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार सिंधु नदी ही है, क्यों कि इसी की मदद से पाकिस्तान 93% पश्चिमी नदियों के पानी का इस्तेमाल करता है और 80% कृषि भूमि इसी जल पर निर्भर है। वास्तव में पाकिस्तान के हजारों– लाखों लोगों की रोजी–रोटी (आजीविका), शहरों का जल आपूर्ति नेटवर्क और हाइड्रो पावर उत्पादन इसी प्रणाली पर टिका हुआ है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि सिंधु जल समझौते पर, साल 1960 में भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ने हस्ताक्षर किये थे। दरअसल, यह विश्व बैंक की मध्यस्थता में हुआ एक ऐतिहासिक करार था और इसका उद्देश्य भारत और पाकिस्तान के बीच जल संसाधनों को लेकर भविष्य में टकराव से बचना था। गौरतलब है कि इस संधि के अंतर्गत रावी, सतलुज, ब्यास का अधिकार भारत को मिला तथा सिंधु, चिनाब, झेलम का नियंत्रण पाकिस्तान को सौंपा गया था। हालांकि, इसके तहत भारत को सीमित सिंचाई, विद्युत उत्पादन और

घरेलू उपयोग की छूट मिली। बहरहाल, उल्लेखनीय है कि भारत ने इससे पहले साल 1965, 1971(भारत पाकिस्तान युद्ध) और 1999 (कारगिल युद्ध) की लड़ाइयों के बावजूद कभी सिंधु जल संधि को सस्पेंड नहीं किया था, यहां तक कि पुलवामा हमले के बाद भी इस संधि को भारत द्वारा जारी रखा गया था, लेकिन इस बार केंद्र सरकार ने पाकिस्तान के समक्ष यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत सरकार की आतंकवाद के प्रति नीति शून्य सहनशीलता (जीरो टोलरेंस) की है और अब आतंकी हमलों पर नरमी नहीं बरती जाएगी तथा रणनीतिक संसाधनों का इस्तेमाल भी हथियार के रूप में किया जा सकता है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि बगलिहार बांध दोनों पड़ोसियों के बीच लंबे समय से विवाद का विषय रहा है, और पाकिस्तान इस मामले में विश्व बैंक की मध्यस्थता की मांग भी कर चुका है। पाकिस्तान को किशनगंगा बांध को लेकर भी खासकर झेलम की सहायक नदी नीलम पर इसके प्रभाव के कारण आपत्ति है। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि भारत द्वारा सिंधु जल संधि के निलंबन के बाद चिनाब नदी का पानी रोकना हो, आयात पर रोक हो, मेल व पार्सल सेवाओं का निलंबन हो या पाकिस्तानी जहाजों पर प्रतिबंध, ये सब दर्शाते हैं कि अब भारत पाकिस्तान को एक सुविचारित व प्रबलध्सख्त नीति के तहत हर तरह से कमजोर कर रहा है और सीधे युद्ध की बजाय यह पाकिस्तान पर एक कड़ा प्रहार है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल फिलहाल भारत के इस कदम के बाद पाकिस्तान में हड़कंप मच गया है और पाकिस्तानी नेताओं ने इसे जंग का ऐलान बताया है। यहां तक कि पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी ने तो यहां तक कहा है कि या तो सिंधु नदी में हमारा पानी बहेगा या उनका खून। इतना ही नहीं, भारत द्वारा बगलिहार डैम से पानी रोकने के बाद पाकिस्तान के उप–प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने भी संसद में यह बात कही है कि–श्यदि भारत सिंधु जल संधि के तहत पाकिस्तान के पानी के साथ कोई छेड़छाड़ करता है, तो यह युद्ध के समान होगा।श पाठकों को बताता चलूं कि उन्होंने यह भी कहा कि–श यह 24 करोड़ पाकिस्तानी नागरिकों की जिंदगी का मामला है और पाकिस्तान इस पर माकूल जवाब देगा।श्इतना ही नहीं , इस संबंध में डार ने सऊदी अरब, यूएई, चीन, तुर्की समेत कई देशों के विदेश मंत्रियों से बात कर पाकिस्तान का पक्ष भी रखा है।भारत ने बिलावल भुट्टो के बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है और यह बात कही है कि आतंकवाद का समर्थन करने वालों को अब खामियाजा भुगतना होगा। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि पहलगाम आतंकी हमले को लेकर एनआईए की शुरुआती जांच में पाकिस्तान के हाथ होने के प्रमाण मिले हैं और भारत ने अब पाकिस्तान से सीधे युद्ध की बजाय सिंधु, चिनाब का जल रोकने समेत अनेक सख्त फैसले लिए हैं,जो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था की रीढ़ को तोड़ने के लिए काफी हैं। भारत की ओर से ये कार्रवाइयां राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति भारत की दृढ़ता को तो दिखाती ही हैं, इनके जरिये पाकिस्तान को यह भी स्पष्ट संदेश दिया गया है कि उसे आतंकवाद को पनाह देने की कीमत चुकानी पड़ेगी। पहलगाम हमले के बाद पाकिस्तान लगातार नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर सीजफायर का लगातार उल्लंघन कर रहा है और इससे उसकी बौखलाहट साफ नजर आ रही है कि वह कदर घबराया हुआ है। उल्लेखनीय है कि पाकिस्तानी सेना ने 24 अप्रैल से शुरू हुए इन सीजफायर उल्लंघनों को कुपवाड़ा और बारामूला से लेकर पुंछ, नौशेरा और अखनूर तक अंजाम दिया है और भारतीय सेना ने हर बार मुंहतोड़ जवाब देते हुए यह संदेश भी दिया है कि भारत किसी भी हाल और परिस्थितियों में अपनी संप्रभुता और सुरक्षा से कोई समझौता नहीं करेगा और आतंकियों और आतंकवाद को मुंहतोड़ जवाब देगा। पाकिस्तान एक ओर तो भारत को उकसाने के लिए शाहीन, गजनवी और अब्दाली जैसी मिसाइलों का परीक्षण कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ, उसके मंत्री और अधिकारी लगातार भारत पर परमाणु हमले की भी गीदड़ भभकियां दे रहे हैं। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि आज पाकिस्तान का असली चेहरा पूरी दुनिया के सामने आ चुका है और यह साबित हो चुका है कि पाकिस्तान दुनिया का एक ऐसा राष्ट्र है जो आतंकवाद और आतंकियों(जिहादी मानसिकता) को प्रश्रय देता आया है और वह पूर्णतया विदेशी कर्ज पर निर्भर है। अंत में यही कहूंगा कि यह ठीक है कि पहलगाम हमले के बाद से भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ अनेक सख्त और कड़े कदम उठाए हैं, जो पाकिस्तान को आर्थिक और कूटनीतिक, दोनों स्तरों पर क्षति पहुंचाने वाले हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि प्रत्यक्ष–परोक्ष तौर पर भारत को भी इसका कुछ न कुछ नुकसान अवश्य पहुंचेगा। पहलगाम हमले के बाद भारत के लोगों का गुस्सा अभी उफान पर है।इस संबंध में हाल ही में दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान हमारे देश के रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने यह बात कही है कि–दुश्मन को उसी की भाषा में जवाब मिलेगा। उन्होंने कहा है कि– मेरा दायित्व है कि अपनी सेना के साथ मिलकर देश की ओर आंख उठाने वालों को मुंहतोड़ जवाब दूं। इस दौरान उन्होंने देशवासियों को आश्वस्त करते हुए यह बात कही है कि– प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आप (भारत के देशवासी) जो चाहते हैं, वह अवश्य होगा। ❒

भारतीय इंजीनियरिंग का अनोखा, नायाब नमूना है चिनाब ब्रिज

✍ सुनील कुमार महला
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

हाल ही में हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने जम्मू–कश्मीर को चिनाब पुल का उद्घाटन करके एक बड़ी सौगात दी है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि यह (चिनाब पुल) दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल है। 6 जून 2025 को चिनाब पुल का उद्घाटन करने के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इसी ट्रैक पर बने अंजी ब्रिज का भी लोकार्पण किया। ये देश का पहला ऐसा रेलवे ब्रिज (पुल) है जो केबल स्टेड तकनीक पर बना है। मीडिया रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि यह पुल नदी तल से 331 मीटर की ऊंचाई पर बना है। 1086 फीट ऊंचा एक टावर इसे सहारा देने के लिए बनाया गया है, जो करीब 77 मंजिला बिल्डिंग जितना ऊंचा है। यह ब्रिज अंजी नदी पर बना है, जो रियासी जिले के कटरा को बनिहाल से जोड़ता है। चिनाब ब्रिज से इसकी दूरी महज 7 किमी है। इस पुल की लंबाई 725.5 मीटर है। इसमें से 472.25 मीटर का हिस्सा केबल्स पर टिका हुआ है।

गौरतलब है कि यह ऐतिहासिक पुल न सिर्फ कश्मीर घाटी को पूरे भारत से जोड़ेगा, बल्कि क्षेत्र में व्यापार, पर्यटन और औद्योगिक विकास को भी नई गति देगा। बहरहाल, पुल के उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री ने कटरा और श्रीनगर को जोड़ने वाली वंदे भारत एक्सप्रेस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। पाठकों को बताता चलूं कि इस ट्रेन के जरिये जम्मू से श्रीनगर का रास्ता केवल 3 घंटे का रह जाएगा। उपलब्ध जानकारी के अनुसार यह जम्मू–कश्मीर में 46 हजार करोड़ की परियोजना है। कहना गलत नहीं होगा कि जम्मू कश्मीर को दो नई वंदे भारत ट्रेनें मिलने तथा जम्मू में नए मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास होने से जम्मू और कश्मीर के विकास को नई गति मिल सकेगी। यह काबिले–तारीफ है कि अब वादिए कश्मीर भारत के रेल नेटवर्क से जुड़ गई है। बहरहाल, यदि हम यहां पर चिनाब पुल की बात करें तो यह ब्रिज, दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे आर्च ब्रिज है। चिनाब रेलवे ब्रिज को बनाने में भले ही 22 साल लगे हों, लेकिन अब इसके शुरू होने के बाद कश्मीर घाटी और जम्मू के बीच सीधा रेल रास्ता बन जाएगा। यह पहली बार होगा जब लोग कन्याकुमारी से सीधे ट्रेन के जरिए कश्मीर घाटी तक जा सकेंगे। वास्तव में चिनाब ब्रिज एक स्टील और कंक्रीट से बना आर्च ब्रिज है, जो रियासी जिले के बक्कल और कौरी गांवों को जोड़ता है और ये ब्रिज चिनाब नदी के ऊपर बना है। इसकी खासियत यह है कि ये नदी के तल से 359 मीटर (लगभग 1,178 फीट) ऊंचा है। यानी यह पेरिस के मशहूर एफिल टॉवर से 35 मीटर और दिल्ली की कुतुब मीनार से करीब 5 गुना ऊंचा यानी कि 287 मीटर ऊंचा है। मीडिया रिपोर्ट्स बताती हैं कि 272 किलोमीटर लंबे इस रेल मार्ग में

1315 मीटर (करीब 4314 फीट) का यह ब्रिज उधमपुर–श्रीनगर–बारामूला रेलवे लिंक प्रोजेक्ट का हिस्सा है। पाठकों को बताता चलूं कि इस पुल का निर्माण 1486 करोड़ की लागत से किया गया है तथा यह 266 किमी प्रति घंटे तक की हवा की गति का सामना कर सकता है। साथ ही, यह ब्रिज भूकंपीय क्षेत्र पांच में स्थित है और रिक्टर स्केल पर 8 तीव्रता के भूकंप को सहने में सक्षम है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि इस ब्रिज की नींव 2003 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने रखी थी तथा इसके निर्माण में 22 साल लगे और इसकी अनुमानित उम्र 120–125 साल से अधिक है। चिनाब रेल ब्रिज की डिजाइन और तकनीकी (इंजीनियरिंग) विशेषताओं ने इसे दुनियाभर में चर्चा का विषय बना दिया है और यह पुल तकनीक के क्षेत्र में भारत के सामर्थ्य को बखूबी दिखाता है। जानकारी के मुताबिक, इस ब्रिज को बनाने में 28,660 से 30,000 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल किया गया है। इसके साथ ही 46,000 क्यूबिक मीटर कंक्रीट का भी यूज हुआ है। साथ ही 6 लाख से ज्यादा बोल्ट भी यूज किए गए हैं। यह काबिले–तारीफ है कि इस पुल को बनाने में नदी के प्रवाह को नुकसान नहीं पहुंचाया गया है, नदी में कोई पिलर नहीं है, बल्कि इसे आर्च तकनीक (जैसा कि ऊपर जानकारी दे चुका हूं) से बनाया गया है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसे 40 टन टीएनटी के बराबर विस्फोट सहने के लिए डिजाइन किया गया है तथा साथ ही इसमें खास पेंट का इस्तेमाल किया गया है, जो इसे 20 साल तक जंग से बचाएगा। पाठकों को बताता चलूं कि वास्तव में इस पुल को किसी हमले से बचने के लिए ब्लास्ट प्रूफ स्टील से तैयार किया गया है।इस ब्रिज के निर्माण में डीआरडीओ की अचूक प्लानिंग शामिल रही है। इसे बनाने के लिए उत्तर रेलवे के साथ कोंकण, अफकान और केआरसीएल ने काम किया। इसके साथ ही भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण जैसी संस्थाएं भी जुड़ी रहीं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इसमें आईआईटी रूड़की और आईआईटी दिल्ली ने भी अपना योगदान दिया है। पुल के निर्माण में 28,660 मीट्रिक टन स्टील का इस्तेमाल हुआ है। इतना ही नहीं, पुल में ऐसी तकनीक स्थापित की गई है कि कोई भी खतरा होने पर वार्निंग अलार्म खुद ही बजने लगेगा। पाठकों को बताता चलूं कि पुल में 112 सेंसर लगाए गए हैं, जो हवा की गति, टेंपरचर और कंपन आदि की जानकारी देंगे। ये न केवल एक रेलवे पुल है, बल्कि यह जम्मू–कश्मीर को हर मौसम में देश से जोड़ने का एक मजबूत माध्यम भी है। स्वयं प्रधानमंत्री ने इस पर यह बात कही है कि– अब लोग चिनाब ब्रिज के जरिए कश्मीर देखने तो जाएंगे ही, साथ ही ये ब्रिज भी अपने आप में एक आकर्षक टूरिस्ट डेस्टिनेशन बनेगा। चिनाब ब्रिज हो या फिर आंजी ब्रिज ये जम्मू–कश्मीर की समृद्धि का जरिया बनेंगे। इससे टूरिज्म तो बढ़ेगा ही इकोनॉमी के दूसरे सेक्टर्स को भी लाभ होगा। जम्मू कश्मीर की रेल कनेक्टिविटी दोनों क्षेत्रों के कारोबारियों के लिए नए अवसर बनाएगी।

इससे (चिनाब पुल से) देश की सैन्य ताकत को भी कहीं न कहीं बल मिलेगा, क्योंकि कश्मीर बर्फबारी के दिनों में भारत से कट जाता था। साथ ही कई क्षेत्रों में आपात स्थिति में सेना को अपनी मूवमेंट में इस बर्फबारी के समय काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। अब चिनाब रेलवे ब्रिज के निर्माण से हर मौसम में कश्मीर पहुंचना सेना के लिए आसान हो जाएगा। पाठकों को बताता चलूं कि इस पुल के बारे में पाकिस्तान के सबसे बड़े मीडिया संस्थानों में से एक डॉन ने यह लिखा है कि, यह पुल चीन की सीमा से लगे भारत के बर्फीले क्षेत्र लद्दाख में रसद में भी क्रांति लाएगा।'

कहना गलत नहीं होगा कि चिनाब और अंजी ब्रिज के उद्घाटन के साथ जम्मू–कश्मीर ने विकास की नई राह पर कदम बढ़ाया है। ये परियोजनाएं न केवल क्षेत्र की कनेक्टिविटी को बेहतर करेंगी, बल्कि पर्यटन, व्यापार और आम लोगों की जिंदगी को भी आसान बनाएंगी। अब कश्मीर की सुंदरता और संसाधन देश–दुनिया से और भी करीब होंगे। अंत में यही कहूंगा कि चिनाब पुल भारतीय इंजीनियरिंग का एक नायाब व बड़ा तोहफा है, जिससे भारत को पाकिस्तान और चीन के खिलाफ रणनीतिक फायदे तो होंगे ही देशवासियों को इसका भरपूर फायदा मिलेगा। ❒

मेक इन इंडिया का उड़ान-भारत में बनेगा राफेल का फ्यूजलाज

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

भारत की रक्षा तैयारियों और नीतिगत रणनीति के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ गया है। फ्रांस की प्रतिष्ठित डिफेंस और एविएशन कंपनी डसॉल्ट एविशन (Dassault Aviation) और भारत की टाटा एडवांस सिस्टम लिमिटेड (TASL) के बीच हुआ करार न केवल भारतीय वायुसेना की ताकत को नई ऊंचाई देगा, बल्कि भारत को वैश्विक रक्षा उत्पादन का अहम केंद्र भी बनाएगा। इस समझौते के तहत अब राफेल फाइटर जेट का फ्यूजलाज (यानि उसका मुख्य ढांचा) पहली बार फ्रांस के बाहर, भारत में तैयार किया जाएगा। साथ ही, भारत सरकार एक और अहम मोर्चे पर सक्रिय हो गई है, घरेलू परामर्श और ऑडिट फर्मों को वैश्विक समकक्षों के स्तर तक लाने की दिशा में।

राफेल फाइटर जेट का फ्यूजलाज यानि उसका मुख्य ढांचा वह केंद्रीय संरचना है, जो विमान के सभी हिस्सों को एक साथ जोड़ता है, जैसे पंख, कॉकपिट, इंजन और लैंडिंग गियर। इसका निर्माण अत्यंत परिशुद्धता और तकनीकी विशेषज्ञता की मांग करता है। डसॉल्ट और टाटा के बीच हुआ यह करार दर्शाता है कि भारत अब सिर्फ हथियारों का खरीदार नहीं, उत्पादक और तकनीकी साझेदार भी बन चुका है।
इस समझौते के तहत हैदराबाद में राफेल फाइटर जेट का फ्यूजलाज तैयार करने के लिए उत्पादन इकाई स्थापित किया जाएगा। इसमें राफेल के पिछले फ्यूजलाज, अगला और पिछला हिस्सा भारत में बनेगा। उत्पादन वर्ष 2027–28 तक शुरू होने की संभावना है। यह पहली बार होगा कि राफेल का निर्माण फ्रांस से बाहर किया जाएगा। इससे भारत में अत्याधुनिक एविएशन तकनीक आएगी। हजारों युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे। भारत रक्षा निर्माण में और सशक्त होगा और भारत में बने राफेल पार्ट्स का निर्यात संभव होगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में चल रहा मेक इन इंडिया अभियान के तहत यह करार एक मील का पत्थर है। भारत अब रक्षा क्षेत्र में आयातक से निर्यातक बनने की ओर अग्रसर है। भारत के बड़े रक्षा उत्पादन में तेजस फाइटर जेट–पूरी तरह स्वदेशी लाइट कॉम्बैट एयरक्राफ्ट है, INS विक्रांत– भारत का पहला स्वदेशी विमानवाहक पोत है, अर्जुन टैंक– भारत निर्मित उन्नत युद्धक टैंक है और अकाश मिसाइल प्रणाली– स्वदेशी वायु रक्षा प्रणाली है।

2017 से 2022 के बीच भारत सरकार ने लगभग 305 परामर्श अनुबंध विदेशी कंसल्टेंसी फर्मों को सौंपे हैं, इनकी अनुमानित लागत थी 500 करोड़ रुपए, जो कि चिंताजनक है क्योंकि इससे भारत की नीतियों और रणनीतियों में विदेशी प्रभाव बढ़ गया है। भारत में कंसल्टिंग और ऑडिट फर्मों में बिग–4 (Big 4) का नाम अक्सर सुनाई देता है, जिसमें Deloitte, Pricewaterhouse Coopers (PwC), Ernst & Young (EY) और KPMG शामिल है। वित्तीय वर्ष 2023–24 में इन चारों ने मिलकर 38,800 करोड़ रुपये का कारोबार किया और 2024–25 में यह 45,000 करोड़ से पार जाने की संभावना है।

अब भारत सरकार चाहती है कि देश में भी 'बिग–4' जैसी मजबूत घरेलू कंसल्टेंसी व ऑडिट फर्में हों, जो नीति निर्माण, बुनियादी ढांचे और डिजिटल गवर्नेंस जैसे क्षेत्रों में सलाहकार की भूमिका निभाएं। प्रधानमंत्री कार्यालय में हुए उच्च स्तरीय बैठक में भारत के भीतर मजबूत कंसल्टेंसी ईकोसिस्टम विकसित करने की रणनीति पर विचार किया गया था। यह रणनीति विकासशील नीति निर्माण, डिजिटल शासन, सार्वजनिक अवसंरचना, और कर नीति जैसे क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देगी।

भारत में भी कई मध्यम आकार की परामर्श कंपनियां और घरेलू खिलाड़ी मौजूद हैं, जिन्हें आगे बढ़ाने की जरूरत है। जिसमें ग्रांट थॉर्नटन भारत (Grant Thornton Bharat), बीडीओ इंडिया (BDO India), नांगिया एंडरसन (Nangia Andersen) और #o एडवाइजर्स (Dhruva Advisors) शामिल है।

भारत अब दो अहम मोर्चों पर आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ा रहा है। वह है रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता– जैसे राफेल का फ्यूजलाज भारत में बनाना। नीति निर्माण में आत्मनिर्भरता– जैसे घरेलू कंसल्टेंसी फर्मों को बढ़ावा देना। यह दोहरी रणनीति भारत को न केवल एक मजबूत सैन्य शक्ति बनाएगी, बल्कि वैश्विक नीति निर्माण का केंद्र भी बना सकता है।

भारत का फ्रांस के साथ यह करार संकेत देता है कि भारत अब केवल रणनीतिक साझेदार नहीं, बल्कि एक तकनीकी साझेदार बन रहा है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था बन रहा है। नीति निर्माण में घरेलू परामर्श फर्मों की भूमिका से भारत की स्थिति और मजबूत होगी।

'मेक इन इंडिया' अभियान अब केवल उत्पादन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि नीति, रक्षा, तकनीक और ज्ञान आधारित क्षेत्रों तक पहुंच गया है। राफेल का भारत में बनना और 'बिग–4' की घरेलू प्रतिकृति तैयार करना दो ऐसे कदम हैं जो भारत को आत्मनिर्भर और सशक्त राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे ले जा रहा है। ❐

आतंक पर भारी है-बाड़मेर-सिंध बॉर्डर पर हिन्दू-मुस्लिम रिश्तों की मिसाल

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा

21 मई को देशभर में आतंक विरोधी दिवस मनाया जाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि आतंकवाद किसी भी सूरत में स्वीकार्य नहीं है और एकजुट समाज ही इसकी सबसे बड़ी ताकत होती है। इस मौके पर हम भारत–पाक सीमा पर स्थित एक ऐसे इलाके की बात कर रहे हैं, जो देश के लिए मिसाल है। यह इलाका है राजस्थान का बाड़मेर जिला, जो पाकिस्तान के सिंध प्रांत से सटा हुआ है। यहां हिन्दू और मुसलमानों के रिश्ते इतने मजबूत और गहरे हैं कि आतंकवाद यहां कभी जड़ें नहीं जमा पाया।

1947 में जब भारत का विभाजन हुआ, तो सिंध प्रांत पाकिस्तान में चला गया। लेकिन इसकी सांस्कृतिक डोर बाड़मेर, जैसलमेर और गुजरात के कच्छ क्षेत्र से अब भी जुड़ी हुई है। भारत में बाड़मेर और पाकिस्तान में सिंध के लोग आज भी रिश्तेदार, साझी विरासत और परंपराओं में बंधे हैं। यहां की खास बात यह है कि दोनों ओर के हिन्दू और सिंधी मुसलमानों में अब भी रोटी–बेटी का संबंध है। बाड़मेर के कई गांवों में मुसलमान अपने घर की गाय को ष्अम्माष कहते हैं। वे हिन्दू त्योहारों में शरीक होते हैं, और हिन्दू परिवार ईद पर उनके घर जाते हैं। यह आपसी प्रेम ही है जो धर्म से ऊपर इंसानियत को रखता है, और आतंक की जहरीली सोच को यहां पनपने नहीं देता है।

यहां के गांवों में हिन्दू और मुसलमान मिलकर होली, दीवाली, ईद और मोहर्रम मनाते हैं। जब किसी परिवार में शादी होती है तो पूरा गांव मेहमान बनता है, चाहे वह किसी भी धर्म का क्यों न हो। गफूर अहमद, बुरहान का तला गांव के बुजुर्ग, बताते हैं, "हम गाय को अम्मा कहते हैं। हमारे गांव में किसी ने कभी सांप्रदायिक बात नहीं की। अगर कोई मुसाफिर रात में कहीं भी रुक जाए, तो हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पहले उसे खाना और पानी देंगे।"

बाड़मेर और सिंध का अधिकतर इलाका रेगिस्तान है। यहां आबादी छितरी हुई है। ऊबड़–खाबड़ जमीन, तेज गर्मी और जल संसाधनों की कमी की वजह से यह क्षेत्र आतंकवादियों के लिए मुफीद नहीं है। सिंध प्रांत में पाकिस्तान के अन्य क्षेत्रों की तुलना में सबसे अधिक हिन्दू आबादी है। वहीं, बाड़मेर के मुसलमान राष्ट्रभक्त और जागरूक हैं। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई की बार–बार कोशिशों के बावजूद उन्हें यहां कोई समर्थन नहीं मिला। सिंध क्षेत्र में भारत समर्थक कई हिन्दू परिवार रहते हैं, जिनके रिश्तेदार भारत में हैं। किसी भी असामान्य गतिविधि की जानकारी भारत तक जल्द पहुंचती है।

1965 में पाकिस्तान ने भारत पर युद्ध थोपने की कोशिश की थी। लेकिन बाड़मेर से भारत ने मुंहतोड़ जवाब दिया था। भारत की सेना सुंदरा तक घुस गई थी और दुश्मन को पीछे धकेल दिया था। 1971 में जब बांग्लादेश की आजादी की लड़ाई के दौरान पाकिस्तान ने फिर भारत पर हमला किया था, तब भी भारतीय सेना ने बाखासर से कूच कर करीब 8000 वर्ग किलोमीटर सिंध की जमीन पर कब्जा कर लिया था। यह युद्ध भारत की निर्णायक जीत थी और इसमें बाड़मेर सीमा का विशेष योगदान रहा था। 1999 में जब कारगिल में पाकिस्तान ने गुपचुप घुसपैठ की, तब बाड़मेर सीमा पूरी तरह शांत रही। पाकिस्तान ने यहां बढ़ने की कोशिश तक नहीं की। यह भारत की सीमा सुरक्षा और स्थानीय आबादी की देशभक्ति का प्रमाण है।

पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ISI ने कई बार इस क्षेत्र में हेरोइन, हथियार और जासूसी नेटवर्क बनाने की कोशिश की। लेकिन हर बार भारत की एजेंसियों और स्थानीय लोगों ने मिलकर इन साजिशों को नाकाम कर दिया। सीमा पार से तस्करी का प्रयास करने वाले कई बार पकड़े गए हैं। बाड़मेर की ठैथ और स्थानीय पुलिस ने मिलकर कई ऑपरेशन चलाए, जिनमें तस्करों को जेल की हवा खानी पड़ी। यहां के सिंधी मुसलमान खुद पाकिस्तान की साजिशों के खिलाफ हैं। वे न सिर्फ इन गतिविधियों में शामिल नहीं होते, बल्कि सुरक्षा एजेंसियों को अलर्ट भी करते हैं।

बाड़मेर और सिंध के लोगों की साझी भाषा सिंधी है। यह सांस्कृतिक जुड़ाव न सिर्फ बातचीत को सहज बनाता है, बल्कि दिलों को भी जोड़ता है। यहां के लोकगीतों में सरहदों के पार के रिश्तों की झलक मिलती है। विवाह, तीज–त्योहार और अन्य सामाजिक अवसरों पर लोकसंगीत से बंधा यह समाज अपने साझा अतीत को जीता है।

1971 के युद्ध में भारत द्वारा सिंध में प्रवेश और वहां के हिन्दुओं की रक्षा के लिए किए गए प्रयास आज भी वहां के लोगों के मन में बसे हैं। सिंध के कई लोग आज भी भारत को मित्र और रक्षक मानते हैं। जहां पाकिस्तान के पंजाब क्षेत्र में भारत विरोधी सोच को बढ़ावा दिया गया है, वहीं सिंध में भारत के प्रति नरमी और प्रशंसा दिखती है। सिंधी समाज भारत के प्रति सांस्कृतिक लगाव महसूस करता है।

जब देश के अन्य सीमांत क्षेत्रों जैसे कश्मीर, पंजाब या पूर्वोत्तर में कभी–कभार अस्थिरता दिखती है, वहां बाड़मेर बॉर्डर पूर्णतः शांत और सद्भावना से भरा रहता है। यहां की सीमा सुरक्षा बल (BSF) और आम नागरिकों के बीच बेहद अच्छा तालमेल है। नागरिक ना केवल सुरक्षाबलों की सहायता करते हैं, बल्कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत जानकारी भी देते हैं।

बाड़मेर को राष्ट्रीय सुरक्षा, सांप्रदायिक सौहार्द और आतंक विरोधी सहयोग के मामले में एक आदर्श मॉडल के रूप में देखा जाना चाहिए। यह भी महत्वपूर्ण है कि सरकार इस क्षेत्र के विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य की योजनाओं को और गति दे ताकि यह सामाजिक सौहार्द भविष्य में भी बरकरार रहे।

बाड़मेर और सिंध की सरहदें सिर्फ देशों को नहीं बांटतीं, बल्कि यह दिखाती हैं कि सरहदों से ऊपर उठकर भी रिश्ते निभाए जा सकते हैं। इस इलाके के हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर यह साबित कर दिया है कि जब समाज में आपसी प्रेम, विश्वास और अपनापन हो, तो कोई भी आतंकवादी ताकत वहां पैर नहीं जमा सकती।

देश के लोगों को बाड़मेर जैसे इलाकों से सीखना चाहिए, जहां इंसानियत की मिट्टी इतनी उपजाऊ है कि नफरत की कोई घास वहां उग नहीं सकता। ❒

हैदराबाद में एक शानदार ग्रैंड फिनाले में ओपल सुचाता चुआंगसरी को 72वीं मिस वर्ल्ड का ताज पहनाया गया

हैदराबाद, तेलंगाना, भारत– 31 मई, 2025 एक अविस्मरणीय शाम जिसने सुंदरता, सामाजिक और पर्यावरण सेवा, और वैश्विक भाईचारे के जश्न में दुनिया को एक साथ ला दिया। हैदराबाद, तेलंगाना ने इतिहास देखा, जब थाईलैंड की ओपल सुचाता चुआंगसरी को हाईटेक्स प्रदर्शनी केंद्र में आयोजित शानदार ग्रैंड फिनाले में 72वीं मिस वर्ल्ड का ताज पहनाया गया। इस पल ने तेलंगाना में एक महीने की लंबी यात्रा के शक्तिशाली समापन को चिह्नित किया, जिसमें दुनिया भर से 108 प्रतियोगियों ने इमर्सिव सांस्कृतिक अनुभवों, परोपकारी चुनौतियों और उद्देश्य–संचालित पहलों में भाग लिया। तेलंगाना में पहली बार 72वें मिस वर्ल्ड फेस्टिवल की मेजबानी की गई, और भारत में तीसरी बार (1996 और 2024 के बाद), इस आयोजन ने हैदराबाद को एकता और शान के वैश्विक मंच में बदल दिया, जिसमें राज्य की गर्मजोशी, समृद्ध विरासत और सांस्कृतिक और अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में बढ़ते कद को प्रदर्शित किया गया। ग्रैंड फिनाले सपनों, विविधता और समर्पण का एक शानदार समापन था, एक ऐसी शाम जिसने नारीत्व को उसके सबसे सशक्त रूप में मनाया।

एक शानदार समारोह में थाईलैंड की ओपल सुचाता चुआंगसरी को चेकिया की क्रिस्टीना पिस्जकोवा ने ताज पहनाया, जो 71वीं मिस वर्ल्ड थीं, जिन्होंने अपने उत्तराधिकारी को यह खिताब सौंप दिया। ताजपोशी के इस पल का जोरदार तालियों से स्वागत किया गया, क्योंकि 72वीं मिस वर्ल्ड 2025 करुणा, आत्मविश्वास और उद्देश्य की मजबूत भावना के मूल्यों को मूर्त रूप देते हुए चमक रही थीं।

शाम दिखावे से परे सुंदरता का जश्न मनाने वाली थीय बुद्धिमत्ता, वकालत और सामाजिक प्रभाव पर जोर दिया गया। स्टेफनी डेल वैले, मिस वर्ल्ड 2016 और भारतीय टेलीविजन प्रस्तोता सचिन कुंभार द्वारा सह–मेजबानी की गई, समापन समारोह ग्लैमर और भावनाओं से भरपूर था। बॉलीवुड सितारों जैकलीन फर्नांडीज और ईशान खट्टर के ऊर्जावान प्रदर्शनों ने भीड़ को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसने वैश्विक कार्यक्रम में एक जीवंत भारतीय स्वभाव जोड़ा।

शाम का एक मुख्य आकर्षण अभिनेता और मानवतावादी सोनू सूद को मिस वर्ल्ड ह्यूमैनिटेरियन अवार्ड प्रदान करना था, जिन्हें मानवीय कार्यों के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए सम्मानित किया गया। उनके प्रयासों ने भारत और दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रभावित किया है, जिससे वे इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए उपयुक्त पात्र बन गए हैं। परोपकारी और उद्यमी सुधा रेड्डी, जिन्होंने पहले ब्यूटी विद अ पर्पस गाला डिनर की मेजबानी की थी, एक विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुईं और उन्हें ब्यूटी विद अ पर्पस के लिए वैश्विक राजदूत नामित किया गया। शाम को बॉलीवुड अभिनेत्री और मिस वर्ल्ड 2017 मानुषी छिल्लर भी मौजूद थीं, जिन्होंने अपने शब्दों और यात्रा से कई लोगों को प्रेरित किया।

प्रतियोगिता की शुरुआत सभी 108 प्रतिनिधियों के परिचय के साथ हुई, जिसके बाद शीर्ष 40 क्वार्टर फाइनलिस्टों की घोषणा की गई – प्रत्येक महाद्वीपीय क्षेत्र से दसः अफ्रीका, अमेरिका और कैरिबियन, यूरोप और एशिया और ओशिनिया। कई प्रतियोगी पहले ही टॉप मॉडल, टैलेंट, मल्टीमीडिया, हेड–टू–हेड और ब्यूटी विद अ पर्पस जैसी फास्ट–ट्रैक चुनौतियों को जीतकर आगे बढ़ चुके थे। शेष सेमीफाइनलिस्टों का चयन व्यक्तिगत

साक्षात्कार के बाद जजों के पैनल द्वारा किया गया और उनके नाम लाइव फिनाले के दौरान बताए गए।

इन 40 क्वार्टर फाइनलिस्टों में से, प्रतियोगिता को शीर्ष 20, फिर शीर्ष 8 तक सीमित कर दिया गया, जिसके बाद चार महाद्वीपीय विजेताओं की घोषणा की गई। इन असाधारण महिलाओं ने अपने–अपने क्षेत्रों का सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधित्व किया और अंतिम दौर में अपना स्थान अर्जित किया।

4 महाद्वीपीय विजेताओं के नाम और देश

- अफ्रीकाः हासेट डेरेजे एडमसु (इथियोपिया)
- अमेरिका और कैरिबियनः ऑरेली जोआचिम (मार्टिनिक)
- यूरोपः माजा क्लाजदा (पोलैंड)
- एशिया और ओशिनियाः ओपल सुचाता चुआंगसरी (थाईलैंड)

अंतिम चार ने फिर जूरी का सामना किया, एक विचारोत्तेजक प्रश्न का उत्तर दिया जिसने उनकी दृष्टि, वाक्पटुता और मूल्यों का परीक्षण किया। उनके जवाबों ने अंतिम विजेता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मिस वर्ल्ड ऑर्गनाइजेशन की अध्यक्ष जूलिया मोर्ले सीबीई, जिन्होंने जूरी की अध्यक्षता की, ने फाइनलिस्टों की गहराई, अनुग्रह और विचारों की स्पष्टता की प्रशंसा की। ताज पहनाए जाने के बाद बोलते हुए उन्होंने कहाः "आज रात, दुनिया ने न केवल सुंदरता देखी, बल्कि प्रतिभा, साहस और बदलाव का आह्वान भी देखा। थाईलैंड की ओपल सुचाता चुआंगसरी ने हमें दिखाया है कि वह एक विजेता से कहीं बढ़कर हैं – वह एक उद्देश्यपूर्ण महिला हैं, जिनकी आवाज को दुनिया सुनने के लिए तैयार है।"

पहली रनर–अप हासेट डेरेजे एडमसु (इथियोपिया) रहीं, दूसरी रनर–अप माजा क्लाजदा (पोलैंड) रहीं, जबकि तीसरी रनर–अप ऑरेली जोआचिम (मार्टिनिक) रहीं।

72वीं मिस वर्ल्ड 2025 के रूप में अपने पहले भाषण में, थाईलैंड की ओपल सुचाता चुआंगसरी ने आने वाले वर्ष के लिए अपना आभार और दृष्टिकोण व्यक्त किया। "यह क्षण केवल एक व्यक्तिगत जीत नहीं है, यह हर युवा लड़की का साझा सपना है जो देखा जाना, सुना जाना और बदलाव लाना चाहती है। मैं इस विरासत का प्रतिनिधित्व करने और मिस वर्ल्ड के रूप में अपने समय का उपयोग वास्तविक बदलाव लाने के लिए करने पर सम्मानित महसूस कर रही हूँ।"

इस साल 72वें मिस वर्ल्ड संस्करण में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और तेलंगाना के शानदार आतिथ्य पर प्रकाश डाला गया। चार सप्ताह की प्रेरणादायक यात्रा के दौरान, प्रतिभागियों ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान, सामुदायिक आउटरीच और उद्देश्य–आधारित नेतृत्व कार्यक्रमों में खुद को डुबो दिया। प्रत्येक अनुभव ब्यूटी विद अ पर्पस की सच्ची भावना और वैश्विक परिवर्तन को प्रेरित करने की इसकी क्षमता को दर्शाता है। ❐

लहरों के परों पर उड़ान : दमन

✍ डॉ. किशोर सिन्हा
वरिष्ठ नाटककार और मीडिया–विशेषज्ञ

कुछ यात्राएं केवल पर्यटन के लिए नहीं होतीं। वे आत्मा को टटोलने, मन को समझने और जीवन की आपाधापी से बाहर निकलकर शांत ठहराव में खो जाने के लिए भी होती हैं। ऐसी ही एक यात्रा की शुरुआत 2 दिसंबर, 2024 को हुई, जब मन ने शहर की भागमभाग से बगावत कर दिया और मोबाइल की घंटियों तथा सोशल मीडिया की अतृप्त ख़्वाहिशों के बीच, एक समंदर ने अंदर से पुकारा 'आ जाओ.... थोड़ा मेरी लहरों के पास बैठकर अठखेलियां तो कर लो।'

लेकिन ये पुकार सिर्फ़ समंदर की लहरों की नहीं थी। ये पुकार चार मित्रों की थी, एक–दूसरे के लिये.... कि चलें, हम चार.... सुदूर.... किसी छांव में.... शहर के कोलाहल, भीड़भाड़ से दूर....। ये चार मित्र थे– कोटा से डॉ रामावतार मेघवाल, पुणे से श्री संजय पवार, नंदुरबार से डॉ जसवंत सींघ बल्वी और चौथा पटना से मैं (तब मैं दिल्ली में ही था, बेटे के पास)।

हमने दमन इसलिए चुना क्योंकि दमन जाने से हमारे कई उद्देश्य पूरे हो रहे थे– एक तो शांत समुद्र का मज़ा लेना था; दूसरे, विश्वप्रसिद्ध 'स्टैच्यू ऑफ़ यूनिटी' देखना था; और तीसरे, कि डॉ जसवंत सींघ बल्वी की चाहत थी कि हम नंदुरबार, (उनके गांव–वान्या विहिर अक्कलकुवा, महाराष्ट्र) उनके घर आयें और ग्रामीण परिवेश का आनन्द लें।

इसलिए हम सबने बड़ौदा में इकट्ठा होने का प्रोग्राम बनाया। मैं दिल्ली से 2 दिसंबर की सुबह बड़ौदा पहुंचा। मेघवाल जी कोटा से वहां मुझसे पहले ही पहुंच चुके थे और संजय पवार तथा जसवंत सिंह नंदुरबार से टैक्सी लेकर हमसे मिलने और आगे की यात्रा साथ में तय करने के लिए बड़ौदा निकल चुके थे।

हमसब इस यात्रा को लेकर अत्यंत उत्साहित और रोमांचित थे। ऐसा इसलिए भी कि हम चारों पहली बार जून 2024 में भूटान में मिले थे, पर भूटान में साथ बिताये चार–पांच दिनों ने हमारे भीतर आत्मीयता का ऐसा बीज बोया कि हम फिर से मिलने के लिए छटपटाने लगे। इसी का परिणाम था– दमन की यात्रा।

सुबह के लगभग दस बजे हम सब बड़ौदा में इकट्ठे हुए, नाश्ता किया और हमारी यात्रा की विधिवत् शुरुआत हो गई। गाड़ी हमारे साथ थी और ड्राइवर थे भारी–भरकम सत्तार भाई, जो बाद में हमारे दोस्त ही बन गये। हम भी उनकी कुशल ड्राइविंग और उनके हाथों में खुद को सौंप सुरक्षित महसूस करते रहे और शहर की हलचल को पीछे छोड़ते हुए हम रवाना हो गये।

बड़ौदा से दमन की सड़क से दूरी लगभग 251 किमी है। सड़कें सजीव चित्रों की भांति लग रही थीं। दाएं–बाएं खेत, कभी–कभी दूर पहाड़ों की एक झलक और बीच–बीच में चाय–नाश्ते की छोटी–छोटी दुकानें। सूरज धीरे–धीरे ऊपर चढ़ रहा था और मेरे भीतर एक अजीब सी उत्सुकता घर करती जा रही थी..... मानो कोई नई किताब खुलने वाली हो।

जैसे–जैसे हम आगे बढ़े, सड़कें थोड़ी संकरी होती गईं हालांकि हरियाली बढ़ती जाती है। दमन के पास पहुंचते ही हवा में नमक घुला हुआ महसूस होता है; समंदर करीब है, इसका अहसास धीरे से सांसों में उतरने लगता है।

हमलोग बलसाड़ होते हुए दमन जब पहुंचे तो सांझ की लाली सड़कों पर उतर चुकी थी। हमने जल्दी–जल्दी कुछ होटल देखे और चूंकि देवकी बीच का नाम सुन रखा था, इसलिए उस बीच–साइड का होटल ही हमने चुना। हमने चेक–इन किया और बावजूद लम्बी थकाऊ यात्रा के हम देवकी बीच की तरफ़ निकल चले। मैंने अपना डीएसएलआर कैमरा संभाला और दूसरों ने मोबाइल।

इस 'बीच' का जितना नाम सुना था, उस हिसाब से इसे देख थोड़ी निराशा ही हुई। वहां समंदर का पानी किनारे से बहुत दूर

था। दूर तक पत्थर ही पत्थर नज़र आ रहे थे। बीच–साइड में गंदगी भी बहुत थी। यहां–वहां कुछ आवारा कुत्ते भी घूम रहे थे। उसी में हमने अपने लिए भी जगह बनाई और ढलते सूर्य के साथ हमने जमकर फ़ोटोग्राफ़ी की। जब सांझ का धूसर रंग चारों तरफ़ फैलने लगा तो हम होटल के अपने कमरों में लौट आये। तय हुआ कि दूसरे दिन यहां के अन्य समुद्र–तटों पर जाया जायेगा।

भौगोलिक और ऐतिहासिक परिचय

दमन भारतीय केन्द्रशासित प्रदेश, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव के दमन ज़िले का एक नगरपालिका क्षेत्र और नगर है। दमन दो भागों में विभाजित है– नानी–दमन (नानी का अर्थ छोटा होता है) और मोती दमन (मोती मतलब बड़ा)। पर मामला यहां उलट है। यानी 'नानी दमन' बड़ा है और 'मोती दमन' छोटा। नानी दमन में अस्पताल, बड़े बाजार और बड़े रहाइशी मकान हैं जबकि मोती दमन अपेक्षाकृत पुराना शहर है।

इतिहास

एक पुर्तगाली, डियोगो डी मेलो सन् 1523 में संयोगवश पहली बार इस स्थान पर पहुंचे थे। जब वो ओर्मस की ओर जा रहे थे तो एक तूफ़ान में फंसकर उनकी नाव दमन तट पर पहुंच गयी। इसके बाद ही यह पुर्तगाली उपनिवेश बना और लगभग 400 वर्षों तक बना रहा। 16वीं सदी में मुगलों से बचने के लिए मोटी दमन में एक बड़ा दुर्ग बनाया गया जो आज भी अपने मूल रूप में विद्यमान है। वर्तमान समय में अधिकांश सरकारी कार्यालय इस दुर्ग के अन्दर ही स्थित हैं। दमन को पुर्तगालियों और भारतीयों के मध्य युद्ध के पश्चात् दिसम्बर 1961 में भारत में शामिल किया गया। पहले इसकी राजधानी गोवा हुआ करती थी, लेकिन अब यहां की राजधानी सिलवासा है।

दमन का इतिहास पुर्तगालियों से गहराई से जुड़ा है। 16वीं शताब्दी में पुर्तगाली यहां आए और लगभग 400 वर्षों तक इस क्षेत्र पर शासन करते रहे। यही कारण है कि यहां की वास्तुकला, चर्च, क़िले– यहां तक कि भाषा में भी पुर्तगाली छाप स्पष्ट दिखाई देती है।

पर्यटन के महत्व के स्थान

मोती दमन क़िला

ये क़िला समुद्र से सटा हुआ है और इसका निर्माण 1559 में हुआ था। विशाल दीवारें, लंबी प्राचीर और समुद्र की ओर खुलते द्वार– सबकुछ जैसे इतिहास को एकबारगी ज़िंदा कर देते हैं। इसके अंदर जायें तो चर्च, प्रशासनिक भवन और पुराने आवासीय परिसर मिलते हैं।

सेन कैथेड्रल

यह चर्च 1603 में बना था और इसकी स्थापत्य शैली गॉथिक एवं पुर्तगाली का सम्मिश्रण है। भीतर की दीवारों पर लकड़ी की नक्काशी और स्तंभों की महीन कारीगरी देखते ही बनती है। वहां बैठकर लगता है मानो समय ठहर–सा गया हो।

नानी दमन : आधुनिकता के रंग

नानी दमन अपेक्षाकृत आधुनिक क्षेत्र है। यहां बाज़ार, होटल, रेस्टोरेंट और रिहायशी कॉलोनियां अधिक हैं। यहां की गलियों में जीवन है जो युवा पर्यटकों के लिए ख़ास आकर्षण का केंद्र है।

जैन मंदिर

नानी दमन दुर्ग के उत्तरी भाग में महावीर स्वामी का 18वीं सदी का जैन मंदिर है। यह श्वेत संगमरमर और सुन्दर नक्काशी के साथ बना हुआ है। दीवारों पर सुन्दर कांच लगा हुआ है जिसके अन्दर 18वीं सदी की भित्तियां महावीर स्वामी के जीवन को निरूपित करती हैं।

हालांकि हम चाह कर भी इन पर्यटन–स्थलों तक नहीं जा पाये।

स्वाद का सफ़र और जंपोर बीच

दूसरे दिन सुबह तैयार होकर हम जंपोर बीच के लिए निकले। लेकिन वहां जाने से पहले एक महत्वपूर्ण काम हमें करना था, और वह था नाश्ता। ऐसे पर्यटन–स्थलों की सुबह प्रायः अलसाई हुई होती है। पर्यटक रात देर तक मौज–मस्ती कर सुबह देर से उठते हैं तो अधिकांश होटल भी 10–11 बजे से पहले नहीं जागते। लेकिन हम खुशनसीब थे कि पास में ही एक रेस्टोरेंट खुला हुआ मिल गया। हमने अपने हिसाब से नाश्ता ऑर्डर कर दिया।

दमन एक तटीय क्षेत्र है इसलिए यहां का खानपान मुख्यतः समुद्री भोजन पर आधारित है। फिश फ़्राई, झींगे की करी और ताज़ा ग्रिल्ड मछली यहां के लोकप्रिय व्यंजन हैं। कुछ रेस्टोरेंट्स में पुर्तगाली व्यंजनों का भी स्वाद मिल जाता है– जैसे, Feijoada (बीन्स और मांस की एक प्रकार की डिश)। यदि आप शाकाहारी हैं तो भी चिंता की बात नहीं। गुजराती थाली से लेकर साउथ इंडियन डोसा तक– सबकुछ उपलब्ध है।

भरपेट नाश्ता करने के बाद हम पहुंचे जंपोर बीच.....

जंपोर बीच नानी दमन से कुछ किलोमीटर की दूरी पर ही है। यह एक शांत, विस्तृत समुद्र–तट है, जहां लहरें बहुत दूर तक आती–जाती हैं और आकर आपके पैरों से लिपट जाती हैं। देवकी बीच–जैसी वीरानी यहां नहीं थी। पर्यटक भी यहां काफ़ी थे। यहां ऊंट की सवारी, पैरासेलिंग, स्पीड बोटिंग और बग्गी राइड जैसे छोटे साहसिक खेल उपलब्ध हैं।

हमने पैरासेलिंग करने की सोची। इससे पहले हममें से किसी ने पैरासेलिंग नहीं की थी। पर दूसरों को करते देख हिम्मत बंधी। हमने उसके लिए शायद 700/रु. प्रति व्यक्ति टिकट ख़रीदा था। उसके बाद हमें एक स्पीड बोट से किनारे से लगभग आधे किमी. की दूरी पर समुद्र की लहरों पर तैरते एक प्लेटफ़ार्म तक पहुंचाया गया। वहां हमारे अतिरिक्त कुछ और सैलानी– लड़कियां, पुरुष–औरतें– भी मौजूद थे।

हमसब रोमांचित थे, शायद थोड़ा डरे हुए भी थे, पर दूसरों को ऊपर आकाश में उड़ते देख हिम्मत भी जुटा रहे थे। जब मेरी बारी आई तो मुझे भी औरों की तरह हार्नेस (harness) पहनाया गया। यह एक प्रकार की बेल्ट होती है, जो आपको जकड़ कर रखती है और गिरने नहीं देती। ये हार्नेस लम्बी–मोटी रस्सी से बंधा होता है, जिसके दूसरे सिरे पर एक पैराशूट होता है। ये रस्सी एक स्पीड–बोट से बंधी होती है जिसे वो खींचकर पहले दूर ले जाती है और फिर धीरे–धीरे छोड़ती है; ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार पतंग को ढील दी जाती है।

अब बारी थी मेरे उड़ने की। मैं भी तैयार था।

बोट ने मुझे हवा के परों पर लाकर छोड़ दिया था और मैं ऊंचा, और ऊंचा जाकर जैसे आसमान से बातें करने लगा था। मेरे ऊपर नीले आसमान की छतरी थी और नीचे सतंदर की अथाह जलराशि.... तक़रीबन मैं समुद्र से सौ फीट ऊपर था। मेरे आसपास हवा की तेज़ सरसराहट थी या नीचे से बोट की आती मद्धिम आवाज़..... पर, उसमें एक अजीब तरह का सुकून था, जिसे आज के पहले मैंने कभी महसूस नहीं किया था।

नीचे मेरे मित्र मेरी फ़ोटो उतारने और वीडियो बनाने में व्यस्त दिखे। लगभग डेढ़ मिनट की अपनी इस रोमांचक उड़ान के बाद जब मैं नीचे आया तो जैसे निःशब्द हो गया था। उस अनुभव को शब्दों में बयां करना मेरे लिए आज भी कठिन है।

उस अनुभव से निकलकर जंपोर बीच से बाहर आये तो सामने टैटू शॉप दिखा। हम वैसे ही वहां टाइमपास करने चले गये। पर वहां पहुंचकर मित्रों ने सोचा कि आये हैं तो टैटू भी बनवा ही लिया जाये। सबने डिजायन पसंद की और बैठ गये टैटू बनवाने। मेरी ऐसी कोई इच्छा नहीं थी। सच कहूं तो उससे होने वाले दर्द की सोच कर मैं अनिच्छुक था। लेकिन जब बारी–बारी से सभी ने टैटू बनवा लिया तो मुझे भी कहने लगे कि मैं भी बनवा लूं.... कुछ नहीं होता.... हल्की चुभन–भर होती है। उन सभी को देख आख़िरकार मैंने भी हिम्मत जुटाकर टैटू बनवा ही लिया– दमन की ख़ास निशानी.....

अब शाम हो चली थी। इस वक्त किसी समुद्रतट पर बैठकर सूर्यास्त की रंगत देखना एक अनमोल अनुभव होगा, ये सोचकर हम फिर से बीच की तरफ़ निकल आये। समंदर का किनारा धीरे–धीरे पीले से सुनहरा होता जा रहा था.... और आसमान विविध रंगों का कैनवास बनकर हमारे मन–प्राणों पर एक इन्द्रधनुष रचता जा रहा था।

अब अंधेरा धीरे–धीरे पसरने लगा था। हम सुबह होटल से चेकआउट कर के ही निकले थे, ये सोचकर कि जहां जगह मिलेगी, वहां रह लेंगे, सिर्फ़ रात ही तो गुज़ारनी है.... सुबह–सबेरे हमें नंदुरबार– जसपाल जी के गांव जो निकलना है। हमारी आपस की बातचीत सुनकर टैटू वाले ने हमसे होटल लेने के बारे में पूछा। हमें और क्या चाहिए था। हमारे 'हां' कहने पर उसने पास में ही एक होटल दिखाया जो अभी बनकर पूरी तरह तैयार भी नहीं हुआ था, पर होटल–जैसी सारी सुविधायें उसमें थीं और किराया बहुत ही कम– चार लोगों के लिए मात्र दो हज़ार रुपये। सो, हम मय सामान उसमें जाकर समा गए।

दमन के लोग बेहद सरल, शांत और मेहमाननवाज़ हैं। हिंदी, गुजराती, मराठी और अंग्रेज़ी यहां आम तौर पर बोली जाती हैं। यहां की संस्कृति में एक अनूठा मिश्रण– पुर्तगाली विरासत, गुजराती जीवंतता और समुद्री सौंदर्य– देखने को मिलता है। ऐसी ही मेहमानवाज़ी उस टैटू वाले ने दिखाई, जिससे हम अभिभूत होकर हम उस होटल में ठहर गये थे।

ठहराव के क्षण : मन की बातें

कभी–कभी किसी यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा वह नहीं होता जो आप देखते हैं, बल्कि वह होता है जो आप महसूस करते हैं। दमन में बिताए वे शांत पल बिना किसी शोर–शराबे के, सिर्फ अपने भीतर झांकते हुए मेरे जीवन की सबसे क़ीमती यादों में शामिल हो गए हैं। समंदर से बातें करना, ख़ाली बीच पर टहलना और सूरज को डूबते देखना– यह सब ध्यान के एक सत्र जैसा था। अब दमन मेरे लिए सिर्फ एक पर्यटन–स्थल नहीं रहा था, वह एक भावना बन कर मेरे हृदय के कोरों में समा गया था। दो दिनों की यह यात्रा जैसे पलक झपकते ही बीत गई। लेकिन यह समय स्मृतियों और अनुभवों से भरपूर रहा, इसमें कोई शक नहीं....।

दमन से लौटने के बाद ये बात शिद्दत से महसूस हुई कि आख़िर दमन ही क्यों.... समुद्रतट तो और भी हैं..... तो इसका जवाब ये है कि यदि आप समंदर के किनारे शांत समय बिताना चाहते हैं, यदि आप पुर्तगाली इतिहास और संस्कृति को निकट से महसूस करना चाहते हैं, यदि आप भीड़–भाड़, कोलाहल से दूर, एक आत्मिक विश्राम चाहते हैं तो दमन से बढ़िया कोई जगह नहीं। यहां कोई दौड़ नहीं, कोई आपाधापी नहीं, कोई हड़बड़ी नहीं.... यहां केवल पछाड़ खाती लहरों का संगीत है, और ये ऐसा संगीत है जो आपके मनोमस्तिष्क को सुकून का अहसास कराता है। ये संगीत उस समय भी हमारे भीतर बजता सुनाई दे रहा था, जब सुबह–सबेरे हमारी कार दमन को पीछे छोड़ती हुई नंदुरबार– जसपाल जी के गांव की ओर भागती जा रही थी....। ❐

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में विश्व पर्यावरण दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम

नई दिल्ली, विश्व पर्यावरण दिवस एवं गंगा दशहरा के पावन अवसर पर दिनांक 5 जून 2025 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की मेजबानी सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता डॉ. हिमांशु उपाध्याय द्वारा की गई।

मुख्य अतिथि श्री चिराग पासवान (कैबिनेट मंत्री, खाद्य प्रसंस्करण एवं उधोग) ने अपने वक्तव्य में कहा कि "आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम गंगा और हिमालय की ग्लेशियरों को बचाएं। सरकार इसके लिए पूरी तरह से तत्पर और संकल्पबद्ध है।"

कार्यक्रम में देश की प्रमुख हस्तियों ने भाग लिया जिनमें प्रमुख रूप से श्री चेतन शर्मा, अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल, भारत सरकार, श्री के.सी. मित्तल, सदस्य, दिल्ली बार काउंसिल, श्री किशोर उपाध्याय, विधायक, टिहरी, श्री ए.के. बाजपेयी, उपाध्यक्ष, लोजपा (पासवान), श्री अविनाश मिश्रा, सलाहकार, नीति आयोग, श्री श्यामल सरकार, सलाहकार, टिहरी, डॉ. जीवीआर शास्त्री, पर्यावरण विशेषज्ञ, श्री आलोक सिन्हा, श्रीमती रूबी शर्मा, अधिवक्ता एवं सदस्य पंजाबी अकादमी, सुरिंदर सिंहा एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया कार्यक्रम में वक्ताओं ने गंगा और हिमालय की वर्तमान संकटपूर्ण स्थिति पर चिंता व्यक्त की और आमजन से अपील की कि वे अपने स्तर पर छोटे–छोटे प्रयासों से जल, पर्यावरण और प्रकृति के संरक्षण में योगदान दें।
डॉ. हिमांशु उपाध्याय ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि "ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से जन–जागरूकता फैलाना अत्यंत आवश्यक है। जब तक समाज स्वयं नहीं जागेगा, तब तक केवल सरकारी प्रयास पर्याप्त नहीं होंगे।"

कार्यक्रम में पर्यावरणविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, अधिवक्ताओं एवं विद्यार्थियों ने भी भाग लेकर गंगा और हिमालय की रक्षा हेतु अपने विचार साझा किए।

गंगा और हिमालय को बचाना केवल एक धार्मिक या सांस्कृतिक कर्तव्य नहीं, बल्कि यह हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवन बचाने का संकल्प है।

–नीलू सिन्हा
चीफ एडिटर एन्ड फाउंडर,
प्रखर गूँज पब्लिकेशंस

❐

400 साल पुराना है साइकिल का सफरनामा

साइकिल चलाएं, बीमारियां भगाये, शरीर को स्वस्थ बनाएं

✍ डॉ. बी.आर. नलवया
एक्स प्रिंसिपल,
गवर्नमेंट कॉलेज, मंदसौर (मध्य प्रदेश)

हर बच्चे, बूढ़े और जवान की तमन्ना होती, साइकिल चलाना। साइकिलों का 400 साल पुराना सफर रहा है। अभी भी यह हर दिल अजीज व्यक्ति की चाहत बनी हुई है। इसलिए भी साइकिल का मजा है कि यह सेहत की साथी, प्रदूषण की दुश्मन और सबसे अधिक किफायती वाहन बनी हुई है, वैसे तो परिवहन के साधनों की संख्या बहुत है, हजारों में, लेकिन साइकिल की बात अपनी अलग ही निराली है।

साइकिल के पुराने दिन अब वापस लौट आए हैं। कई देशों में अब साइकिल चलाने का चलन बढ़ता जा रहा है। हमारे देश में भी अब इसे गरीबी या पिछड़ेपन से जोड़ने के बजाय पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य की दृष्टि से उत्तम माना जाने लगा है। अब साइकिल चलाना शौकिया तौर के साथ ही डॉक्टर और जीम ट्रेनर भी इसे नियमित रूप से चलाने की सलाह देते हैं। साइकिल चलानेवाले को निम्न दृष्टि से देखने की स्थितियां अब खत्म हो चुकी है। साइकिल में भी अब अनेक विकल्प आ चुके हैं, रईस लोगो को बहुत अच्छी किस्म की महंगी साइकिल चलाते हुए देखा जाता है। यही नहीं देश के कई राज्यों के मुख्यमंत्री व अन्य मंत्रीगण भी अपने–अपने सचिवालय विश्व साइकिल दिवस पर साइकिल से ही जाते हैं, वे आम जनता को यह संदेश देते हैं कि स्वास्थ्य व पर्यावरण के लिए नियमित रूप से साइकिल चलाएं। जापान में तो हफ्ते के एक दिन सभी अधिकारी, नेतागण व आम जनता साइकिल का ही प्रयोग करते हैं।

सर्वविदित है कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 3 जून 2018 को विश्व साइकिल दिवस मनाने की घोषणा की थी जिसका कई देशों ने समर्थन किया। पिछले कुछ वर्ष में विश्व साइकिल दिवस के दिन ही 1951 में स्थापित भारत की सबसे बड़ी साइकिल निर्माता कंपनी एटलस बंद हो गई थी।

प्रतिवर्ष 40 लाख साइकिल उत्पादन करने वाली भारत की सबसे बड़ी दुनिया की जानी–मानी कंपनी एटलस बंद होने से साइकिल उद्योग को काफी क्षति हुई।

यदि देखा जाए तो स्वास्थ्य के लिए सबसे सुलभ व सस्ता साधन साइकिल ही है क्योंकि यह सेहत बनाने के साथ ही प्रदूषण की दुश्मन भी है। हर बच्चे का ख्वाब और सबसे किफायती कोई वाहन है तो वह केवल साइकिल ही है। साइकिल की खुशी का पैमाना 200 साल से भी पुराना है। आज जितने स्टाइलिश और नए–नए अंदाज में हमारे सामने साइकिल आ रही है वे वास्तव में कई बार परिवर्तित होकर आधुनिक युग के अनुसार बनी है।

विश्व की सबसे पहली साइकिल लकड़ी की बनी थी। इसमें लकड़ी के ही पहिए और लकड़ी के ही हैंडल थे तथा इसमें ना तो पेडल थे और ना ही चेन। जो पैदल चलकर बोझ लाद कर यात्रा करने के लिए उपयुक्त थी। ऐसे लोगों के लिए यह सायकिल जर्मनी के बैरन कार्ल वान डाइस बेरेंस ने 1817 में बनाई थी। इसके पश्चात 1860 में फ्रांस में पेडल–चेन व बैठने के लिए सीट लगाकर इसे थोड़ा और आरामदायक बना दिया गया। इसके कई वर्षों के बाद 1977 में गियर वाली साइकिल ने यूरोपीय बाजार में अपना स्थान बना लिया था।

साइकिल चलाने में सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि हर किसी शहर में ना तो साइकिल ट्रैक बने हुए हैं और ना हीं सड़कों पर सिल्वर–व्हाइट पेंट की मार्किंग की गई है। ऐसे में साइकिल चलाने वालों को तेज रफ्तार कार व बाइक चलाने वालों के साथ ही सफर पूरा करना पड़ रहा है। इसमें दुर्घटना की काफी संभावनाएं बनी रहती है। उज्जैन में इस दिशा में हीरा मिल क्षेत्र में साइकिल ट्रैक बना है तथा साथ ही महानंदा नगर एरिया के चारों ओर भी साइकिल ट्रैक बन चुका है। साथ ही पिछले दो वर्षों में भारत सरकार साइकिल चलाने के लिए स्मार्ट सिटी में साइकिल प्रतियोगिता भी करवा रही है।

अब निश्चित ही साइकिल के प्रति जागरूकता बढ़ने व बढ़ाने की महती आवश्यकता है क्योंकि साइकिल चलाने से स्वास्थ्य अच्छा रहता है। एक उम्र के बाद इससे मोटापे व जोड़ों में दर्द की समस्या भी नहीं होती है। अतः धन की बचत और बेहतर स्वास्थ्य के लिए कम दूरी की यात्रा साइकिल से ही पूरी करनी चाहिए। कुछ लोग साइकिल से यात्रा करने में भी पीछे नहीं हैं ये लोग अनिवार्य रूप से नियमित 1 घंटे साइकिल चलाते ही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार साइकिल स्वास्थ्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण परिवहन सिद्ध हो चुका है। ❒

कविता

माँ को बदलते देखा

अम्बिका कुमारी कुशवाहा
पटना (बिहार)

मैने माँ को चुपचाप था देखा,
चूल्हे पर रोटी पकाती हुई।
आँखों में हर सपने संभाले हुए,
जीवन में मुस्कान सजाती हुई।
फिर एक वक्त जब संकट आया,
बिखरे थे माँ के सपने सारे।
माँ ने संभाला हर टूटा सपना,
हौसले से भरा वो आँचल प्यारा।
देहरी लांघ जब माँ दुनिया आई,
नौकरी की राह पर कदम बढ़ाई।
घरेलू रंग से माँ आधुनिक बनी,
तब मैने माँ को बदलते देखा।
रिश्ते के अहंकारी जो थे अपने,
माँ की मासूमियत को छलते सारे।
फिर भी माँ ने हिम्मत न हारी,
तब माँ योद्धा बन तलवार उठाई।
माँ ने आँसुओं को पीछे छोड़ा,
हर मुश्किलों ने था उन्हें ललकारा।
चट्टानों सा खड़ी हर फर्ज निभाई,
तब मैने पिता का साया माँ में देखा।
मैने माँ को शक्ति बनते देखा,
संस्कृति–रंग से भी रंग कर,
माँ को आधुनिक बनते देखा।
मैंने माँ में है ईश्वर को देखा।

❐

गीत

तेरे पानी में है खून

बलविन्दर बालम
ओंकार नगर, गुरदासपुर, पंजाब

पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
गूंगी बहरी एवं खामोश कहानी में है खून।
दुख के साथ अपाहिज हो कर बैठी है तनहाई।
मानव से ही मानवता की टूटी थी अंगड़ाई।
बीते अन्दर तड़पी ठाठ जवानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
लहराया था एक तिरंगा भारत के सिर ऊपर।
आजादी की नींव रखी खुशहाली के मन्दिर।
योद्धे वीर सिपाहियों की कुर्बानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
तेरे टुकड़े–टुकड़े किए तेरे मूल स्थानों ने।
लाखों जानें दे दी थी फिर अग्नि में परवानों ने।
तेरी ठहरी छल्लेदार रवानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
जिस ने पार लगाने वाली पूरी की थी रीति।
परन्तु इस की नीयत में थी खोटी एक प्रीति।
खेवनहारे की गंदी महमानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
तेरी उजड़ी मांग में ऐसे बिखरा है सिंदुर।
दोबारा इकट्ठे हुए नहीं नांव चप्पु पूर।
छम–छम रोती घबराती वीरानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
इस के मोती बिखर गए हैं राहों की रखवाली में।
फिर भी खैर मनाई जाए सज्जनों की खुशहाली में।
सुन्दर पुल की रंगबिरंगी गानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।
फिर भी प्यार–मुहोब्बत वाली टूटी नहीं मर्यादा।
पहले से भी और बढ़ी है इस की इज्जत ज्यादा।
बालम साझा वाली मेहरबानी में है खून।
पांच दरियाओं वाली तेरे पानी में है खून।

❐

भारतीय ज्योतिष में नक्षत्रों का महत्व

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ
संपर्क: 9709378488

भारतीय ज्योतिष शास्त्र (वैदिक ज्योतिष) में नक्षत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। नक्षत्र न केवल किसी व्यक्ति की जन्मकुंडली का आधार होते हैं, बल्कि उनके स्वभाव, भविष्य और जीवन की दिशा को भी गहराई से प्रभावित करते हैं।

नक्षत्र क्या होते हैं?

नक्षत्र शब्द का शाब्दिक अर्थ है– नक्ष यानी आकाश और 'त्र' यानी रक्षा करने वाला। ज्योतिषीय दृष्टि से नक्षत्र आकाश में स्थित 27 प्रमुख तारा समुहों को कहा जाता है, जो चंद्रमा की गति के अनुसार विभाजित किए गए हैं। चंद्रमा लगभग 27.3 दिनों में पृथ्वी की परिक्रमा करता है और हर दिन वह एक नक्षत्र में स्थित होता है।

नक्षत्रों की सूची निम्नवत है–

1. अश्विनी
2. भरणी
3. कृतिका
4. रोहिणी
5. मृगशिरा
6. आर्द्रा
7. पुनर्वसु
8. पुष्य
9. आश्लेषा
10. मघा
11. पूर्वा फाल्गुनी
12. उत्तरा फाल्गुनी
13. हस्त
14. चित्रा
15. स्वाति
16. विशाखा
17. अनुराधा
18. ज्येष्ठा
19. मूल
20. पूर्वाषाढ़ा
21. उत्तराषाढ़ा
22. श्रवण
23. धनिष्ठा
24. शतभिषा
25. पूर्वाभाद्रपद
26. उत्तराभाद्रपद
27. रेवती

(कभी–कभी 28वां नक्षत्र अभिजीत को भी शामिल किया जाता है।)

नक्षत्रों का उपयोग

जन्म नक्षत्र– किसी व्यक्ति का जन्म जिस नक्षत्र में होता है, उसे उसका जन्म नक्षत्र कहा जाता है। यह उसके स्वभाव, मानसिकता, व्यवहार, स्वास्थ्य, और कर्मों को दर्शाता है।

शुभ कार्य जैसे विवाह, गृह प्रवेश, नामकरण संस्कार आदि में शुभ नक्षत्रों का चयन आवश्यक माना जाता है।

दशा प्रणाली– भारतीय ज्योतिष की प्रसिद्ध विंशोत्तरी दशा प्रणाली नक्षत्रों पर आधारित है। इसमें जन्म नक्षत्र के स्वामी के अनुसार दशा क्रम तय होता है।

शुभ–अशुभ फल– हर नक्षत्र की एक विशेष प्रकृति होती है। कुछ को शुभ, कुछ को तामसिक या उग्र माना जाता है। उदाहरण के लिए, पुष्य और रोहिणी को अत्यंत शुभ नक्षत्र माना जाता है, जबकि अश्लेषा और मूल को थोड़े जटिल फलदायक कहा जाता है।

नक्षत्रों और चंद्रमा का संबंध

चूँकि चंद्रमा मन और भावनाओं का कारक है, और वह प्रतिदिन एक नक्षत्र में भ्रमण करता है, इसलिए हर दिन का प्रभाव भी उस दिन के चंद्र नक्षत्र पर निर्भर करता है। यही कारण है कि पंचांग में प्रतिदिन के नक्षत्र का उल्लेख होता है।

जन्म नक्षत्र फल

अश्विनी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य भाग्यवान, सुंदर, कार्य में कुशल ,धनवान और लोकप्रिय होता है।

भरणी नक्षत्र में जन्मजातक निरोग, सत्यवक्ता, दृढ़ प्रतिज्ञ, सुखी और धनी होता है।

कृतिका नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य कृपण, न्याय प्रिय एवं प्रशासनिक क्षमता वाले होते हैं।

रोहिणी नक्षत्र में जन्म होने से व्यक्ति धनवान, मेधावी, प्रियवक्ता, सत्यवादी और सुंदर होता है।

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म होने से मनुष्य चतुर , चंचल, स्वार्थी , अहंकारी और धैर्यवान होता है।

आर्द्रा नक्षत्र में जन्मे लोग साहसी, बुद्धिमान और महत्वाकांक्षी होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म होने से व्यक्ति सुखी, भोगी, सुंदर , लोकप्रिय, पुत्र और मित्र गण से युक्त होता है।

पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोग धनवान, पुत्र युक्त , पंडित , शांत, सुंदर ,धर्मात्मा और सुखी होते हैं।

अश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेनेवाले लोग रहस्यमयी, मनोवैज्ञानिक, गहराई वाले, गहन सोच और कूटनीतिज्ञ होते हैं।

मघा नक्षत्र में जन्म हो तो वह मनुष्य बहुत नौकर रखने वाला, धनी, भोगी, पिता का भक्त, उद्योगी, ,आत्मविश्वासी, वंश गौरव से युक्त एवं राजा का आश्रित होता है।

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म होने से व्यक्ति विद्या, धन से युक्त, गंभीर, स्त्रियों का प्रिय, सुखी और विद्वजनों से पूजित होता है।

उत्तराफाल्गुनी में जन्म होने से व्यक्ति जितेन्द्रिय, शूरवीर, कोमल, वक्ता, शस्त्र विद्या में निपुण, महायोद्धा और लोकप्रिय होता है।

हस्त नक्षत्र में जन्म होने से व्यक्ति चतुर, दक्ष, व्यावहारिक एवं हाथ की कला में निपुण होता है।

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति पुत्र –स्त्री से युक्त, संतोषी, धनवान, देवता और ब्राह्मणों का भक्त होते हैं।

स्वाति नक्षत्र में जन्म होने से व्यक्ति चतुर, धर्मात्मा , कृपण , लोकप्रिय, सुशील और देवता का भक्त होता है।
विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति स्वभाव से महत्वाकांक्षी , लक्ष्य केंद्रित, नेतृत्व की शक्ति, राजनीतिज्ञ एवं धर्म प्रचारक होते हैं।

अनुराधा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति पुरुषार्थ साधन के लिए विदेश जानेवाले, बंधुओ का कार्य करनेवाले, प्रशासनिक क्षमता वाले, टीम भावना एवं भक्ति भाव वाले होते हैं।

जिस व्यक्ति का जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र में होता है वह बहुत मित्र वाले ,प्रधान, कवि, दानी, पंडित और धर्मात्मा होते हैं।

मूल नक्षत्र में जन्म लेनेवाला व्यक्ति सुखी, धन वाहन से युक्त ,बलवान,

स्थिर कार्य करने वाला, शत्रुओं को जीतने वाला और पंडित होता है।

पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति हो तो वह शरण में आए हुए का उपकार करने वाला, लोकप्रिय, अपराजेय ऊर्जावान, वाद विवाद में निपुण एवं सब कार्यों में चतुर होता है।
उत्तरा साढ़ में जन्म लेने वाले व्यक्ति स्थिर विचार वाले, धैर्यशील, बहुत मित्र वाले, हृष्ट–पुष्ट और लंबे शरीर वाले, विजयी, सुखी ,वीर एवं विनय युक्त होते हैं।

श्रवण नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति श्रोता, ज्ञान संचय करने वाले, कृतज्ञ, सुंदर, दाता, सब गुणों से युक्त एवं लक्ष्मीवान होते हैं।

धनिष्ठा नक्षत्र में जन्म लेनेवाली व्यक्ति संगीत प्रिय, बंधुओ से मान्य, स्वर्ण एवं रत्न से युक्त तथा सैकड़ो व्यक्तियों का पालक होता है।

शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेनेवाले व्यक्ति कृपण, धनवान, विदेश में रहने की कामना करने वाले, गुढ़ ज्ञान में रुचि एवं खोजी स्वभाव वाले होते हैं।

पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति आदर्शवादी, दार्शनिक, वक्ता, सुखी एवं संतान से युक्त होते हैं।
उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति गौरवर्ण, बलवान, धर्मात्मा ,शत्रु को जीतने वाला, गंभीर, गहरे विचारों वाले और साहसी होते हैं।

रेवती नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति भावुक, संवेदनशील, कलाप्रिय, पवित्र, कार्य में निपुण, साधु, वीर, पंडित और धन–धान्य से युक्त होते हैं।

अभिजित् नक्षत्र में जन्म लेने वाली व्यक्ति सुंदर स्वरूप, साधुओं का प्रिय, विनीत, यशस्वी ,देवताओं का भक्त, स्पष्ट वक्ता और अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।

जन्म नक्षत्र जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालता है लेकिन केवल नक्षत्र ही नहीं बल्कि कुंडली के अन्य ग्रह योग दशाएं और भाव भी जीवन की दिशा और दशा को तय करते हैं। फिर भी नक्षत्र से हम अपने स्वभाव और जीवन के रुझानों को जान सकते हैं। ❐

श्रीमद्भगवद्गीता और नाट्यशास्त्र का यूनेस्को धरोहर में शामिल होना महत्वपूर्ण

✍ संदीप सृजन
संपादक– शाश्वत सृजन
ए–99 वी.डी. मार्केट, उज्जैन 456006

भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत ने विश्व मंच पर एक बार फिर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। श्रीमद्भगवद्गीता और भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र को यूनेस्को के प्रतिष्ठित मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया जाना न केवल भारत के लिए गर्व का क्षण है, बल्कि यह मानव सभ्यता के बौद्धिक और सांस्कृतिक इतिहास के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम भी है। इन दोनों ग्रंथों का यूनेस्को धरोहर में शामिल होना, इन ग्रंथों के सांस्कृतिक और दार्शनिक योगदान के वैश्विक प्रभाव और भविष्य की पीढ़ियों के लिए उनके संरक्षण के महत्व को दर्शाता है।

यूनेस्को का मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कार्यक्रम, जो 1992 में शुरू हुआ, विश्व की महत्वपूर्ण दस्तावेजी धरोहरों को संरक्षित करने और उनकी वैश्विक उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है। इसका उद्देश्य ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक दस्तावेजों को विस्मृति से बचाना और भावी पीढ़ियों के लिए उनकी प्रासंगिकता बनाए रखना है। इस रजिस्टर में शामिल होने वाली धरोहरें मानव सभ्यता के लिए असाधारण महत्व रखती हैं, और श्रीमद्भगवद्गीता व नाट्यशास्त्र का इसमें शामिल होना भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को वैश्विक मान्यता प्रदान करता है।

श्रीमद्भगवद्गीतारूआध्यात्मिक और

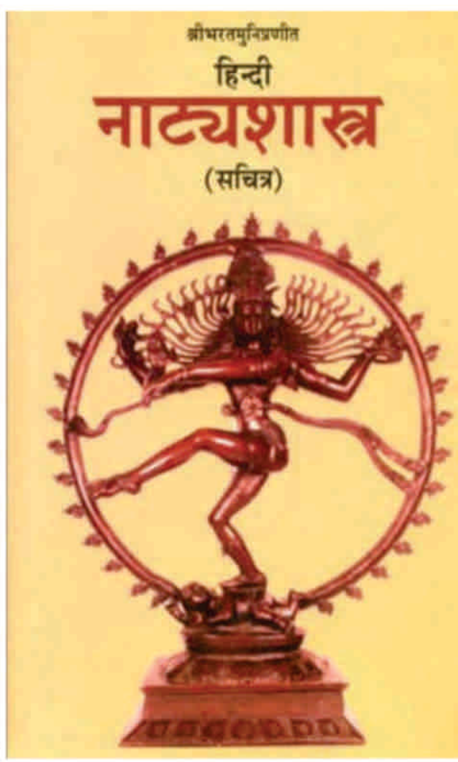

दार्शनिक धरोहर

श्रीमद्भगवद्गीता, जिसे अक्सर केवल गीता कहा जाता है, भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता का एक अनमोल रत्न है। यह महाभारत के भीष्म पर्व का हिस्सा है और इसमें भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया उपदेश शामिल है। गीता के 18 अध्यायों में 700 श्लोक हैं, जो जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे कर्तव्य (धर्म), ज्ञान (ज्ञान योग), भक्ति (भक्ति योग), और कर्म (कर्म योग) पर गहन दार्शनिक विचार प्रस्तुत करते हैं।

गीता का केंद्रीय संदेश मानव जीवन को संतुलित और अर्थपूर्ण बनाने के लिए है। यह व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का निर्वहन निष्काम भाव से करने, आत्म–साक्षात्कार की दिशा में अग्रसर होने और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण की प्रेरणा देता है। गीता में तीन गुणों (सत्व, रजस, तमस) का उल्लेख और सात्विक बुद्धि की महत्ता पर बल दिया गया है, जो मानव को धर्म और अधर्म, बंधन और मोक्ष

के बीच अंतर समझने में मदद करती है।

यूनेस्को के मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में गीता का शामिल होना इसकी सार्वभौमिक प्रासंगिकता को रेखांकित करता है। यह ग्रंथ न केवल हिंदू धर्म का आधार है, बल्कि इसमें वैदिक, बौद्ध, जैन और चार्वाक जैसे विविध भारतीय दार्शनिक विचारों का समन्वय है। गीता का प्रभाव विश्व स्तर पर देखा जा सकता है, क्योंकि इसे विभिन्न भाषाओं में अनुवादित किया गया है और यह विश्व भर के दार्शनिकों, विचारकों और सामान्य लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है।

नाट्यशास्त्ररूभारतीय कला और सौंदर्यशास्त्र का आधार

भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र भारतीय प्रदर्शन कलाओं का एक प्राचीन विश्वकोश है। यह नाटक, अभिनय, नृत्य, संगीत, रस (सौंदर्य अनुभव), और भाव (भावनात्मक अभिव्यक्ति) जैसे विषयों पर व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। नाट्यशास्त्र को भारतीय रंगमंच, काव्यशास्त्र और सौंदर्यशास्त्र का आधार माना जाता है। इसमें रस सिद्धांत, जो नौ रसों (शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, और शांत) को परिभाषित करता है, ने भारतीय कला और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है।

नाट्यशास्त्र केवल एक तकनीकी ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की भावनात्मक और सौंदर्यपूर्ण चेतना का प्रतीक है। इसने न केवल भारत में, बल्कि दक्षिण–पूर्व एशिया और अन्य क्षेत्रों में भी प्रदर्शन कलाओं को आकार दिया है। नाट्यशास्त्र में वर्णित सिद्धांत आज भी भारतीय शास्त्रीय नृत्य (जैसे भरतनाट्यम, कथक, और ओडिसी) और रंगमंच में जीवंत हैं। यूनेस्को द्वारा नाट्यशास्त्र को मान्यता देना भारतीय कला और संस्कृति की वैश्विक स्वीकार्यता को दर्शाता है। यह ग्रंथ मानव अभिव्यक्ति और सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में भारत के योगदान को रेखांकित करता है।

वैश्विक मंच पर बौद्धिक और सांस्कृतिक छाप

श्रीमद्भगवद्गीता और नाट्यशास्त्र का मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल होना कई दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। इन ग्रंथों का यूनेस्को द्वारा सम्मानित होना भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक वैभव को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाता है। यह भारत के लिए गर्व का क्षण है, जैसा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने बयान में व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि यह भारत की शाश्वत ज्ञान और सांस्कृतिक प्रतिभा का सम्मान है। मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर का उद्देश्य ऐतिहासिक दस्तावेजों को संरक्षित करना है। गीता और नाट्यशास्त्र के शामिल होने से इन ग्रंथों की पांडुलिपियों और उनके ज्ञान को डिजिटल और भौतिक रूप में संरक्षित करने में मदद मिलेगी। यह सुनिश्चित करता है कि ये धरोहरें भावी पीढ़ियों के लिए उपलब्ध रहें।

गीता और नाट्यशास्त्र का वैश्विक मंच पर प्रदर्शन विश्व भर में दार्शनिक और सांस्कृतिक संवाद को प्रोत्साहित करता है। गीता का संदेश और नाट्यशास्त्र के सौंदर्यशास्त्र विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के लिए प्रासंगिक हैं, जो मानवता के साझा मूल्यों को मजबूत करते हैं। यूनेस्को की मान्यता से इन ग्रंथों पर वैश्विक स्तर पर शोध और अध्ययन को बढ़ावा मिलेगा। विद्वान और शोधकर्ता इन ग्रंथों के दार्शनिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को और गहराई से समझ सकेंगे। गीता और नाट्यशास्त्र जैसे ग्रंथ भारत की बौद्धिक और सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक हैं, जो विश्व में भारत की छवि को और सशक्त करते हैं।

गीता और नाट्यशास्त्र के शामिल होने के साथ, भारत की कुल 14 कृतियां अब मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड रजिस्टर का हिस्सा हैं। इससे पहले, ऋग्वेद (2007 में शामिल), तवांग शास्त्र, और संत तुकाराम की अभंग रचनाएं भी इस सूची में स्थान पा चुकी हैं। यह भारत की समृद्ध साहित्यिक और दार्शनिक परंपरा का प्रमाण है। गीता और नाट्यशास्त्र का यूनेस्को धरोहर में शामिल होना केवल एक सम्मान नहीं, बल्कि एक जिम्मेदारी भी है। भारत को इन ग्रंथों के संरक्षण, प्रचार और प्रसार के लिए और अधिक प्रयास करने होंगे। डिजिटल संग्रह, अनुवाद, और शैक्षिक पाठ्यक्रमों में इन ग्रंथों को शामिल करना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकते हैं। साथ ही, इन ग्रंथों के मूल्यों को युवा पीढ़ी तक पहुंचाना भी आवश्यक है, ताकि वे अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहें। ये ग्रंथ न केवल भारत की आध्यात्मिक और कलात्मक चेतना के आधार हैं, बल्कि वे मानव सभ्यता के लिए भी अमूल्य धरोहर हैं। इस मान्यता से न केवल इन ग्रंथों का संरक्षण सुनिश्चित होगा, बल्कि विश्व स्तर पर भारतीय दर्शन और कला की समझ को भी बढ़ावा मिलेगा। यह भारत के लिए गर्व का क्षण है, जो हमें अपनी समृद्ध विरासत को और अधिक जिम्मेदारी के साथ संजोने और साझा करने की प्रेरणा देता है।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तम्भकार है)

❒

‘विश्व रक्तदाता दिवस’ के अवसर पर आई.ए. एस. एसोसिएशन द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन

पटना, 14 जून : विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर आई.ए. एस. एसोसिएशन, अन्य ऑल इंडिया सर्विस एसोसिएशन तथा उनके ऑफिसर्स वाईव्स एसोसिएशन द्वारा आई.ए. एस. भवन के सभागार में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुख्य सचिव श्री अमृत लाल मीणा, पुलिस महानिदेशक श्री विनय कुमार, प्रधान मुख्य वन संरक्षक श्री प्रभात कुमार गुप्ता, श्रीमती बर्फी मीणा, अध्यक्षा, IAS Wives एसोसिएशन, श्रीमती हरजोत कौर, सचिव IAS Wives एसोसिएशन, श्रीमती ऋचा गुप्ता, अध्यक्षा, IFS Wives एसोसिएशन द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।

इस मौके पर मुख्य सचिव श्री अमृत लाल मीणा ने कहा कि "रक्तदान जीवन दान है। यह ऐसा पुण्य कार्य है जो बिना किसी आर्थिक व्यय के किया जाता है।" मां ब्लड बैंक को बड़े पैमाने पर सहयोग के लिए बधाई देते हुए कहा कि "पांच वर्ष से ये महान काम चल रहा है। अभी तक 750 लोगों द्वारा रक्तदान किया गया है। इससे 900 लोगों की जान बची है। इस वर्ष हर वर्ष से अधिक रक्तदान कर नया रिकॉर्ड बनेगा।"

डीजीपी विनय कुमार ने कहा कि "यह परम पुनीत आयोजन है। बड़ी संख्या में सदस्यगण भाग ले रहे हैं। रक्तदान मानवता की सबसे बड़ी सेवा है।"

रक्तदान शिविर कार्यक्रम में तीनों सेवा (आईएएस, आईपीएस तथा आईएफएस) के अधिकारियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन आई.ए. एस. ऑफिसर्स एसोसिएशन के सचिव श्री दीपक कुमार सिंह द्वारा किया गया।

रक्तदान शिविर में माँ वैष्णो देवी सेवा समिति द्वारा संचालित माँ ब्लड सेंटर, दरियापुर, पटना द्वारा तकनीकी सहयोग प्रदान किया गया। संघ के सचिव श्री दीपक कुमार सिंह के कुशल मार्गदर्शन तथा माँ ब्लड सेंटर के श्री मुकेश हिसारिया, श्री संजय तोतला, श्री जगजीवन सिंह, श्री नंद किशोर अग्रवाल, श्री मनीष बनेटिया, श्री नरेश अग्रवाल, श्री मयूर पोद्दार, श्री अनिल सर्राफ और श्री आलोक अग्रवाल की सक्रीय देख रेख में रक्तदान शिविर कार्यक्रम का संचालन सफलता पूर्वक किया गया। कुल 207 लोगों ने रक्तदान किया। रक्तदान करने वालों में एडीजी कुंदन कृष्णन, आईएफएस श्री गोपाल सिंह, आईएएस श्री संतोष कुमार मल्ल, आईएएस श्री एम. रामचंद्रडु, आईएएस श्री जय सिंह, आईएएस श्री मनोज कुमार, आईएएस श्री दीवेश सेहरा, आईएएस श्री संजय कुमार सिंह, आईएएस श्री वैभव श्रीवास्तव, आईएएस श्री विभूति रंजन चौधरी, विशेष सचिव, सुमन कुमार, अपर सचिव, श्रीमती प्रियंका सिंह, श्रीमती स्नेहा पांडे, आईपीएस विक्रम सिहाग, श्रीमती गरिमा और भारतीय वन सेवा के कई अधिकारियों ने स्वेच्छा से अपना रक्तदान किया।

कई पुलिस अधिकारियों सहित एसटीएफ तथा बीएमपी के जवानों, साथ ही वनों की सुरक्षा के लिये कार्यरत फॉरेस्ट गार्ड तथा वनपालों ने भी रक्तदान कर इस अभियान को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। शिविर में कुल 207 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। इस दौरान रक्तवीरों को सम्मानित भी किया गया। ❒

मलोट (पंजाब) में नई राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन

पंजाब के मलोट में बीएसएनएल टेलीफोन एक्सचेंज के पास लिबर्टी शोरूम के ऊपर दूसरी मंजिल पर एक भव्य नई राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी का उद्घाटन किया गया। इसमें छात्रों को पढ़ाई के लिए बहुत ही आरामदायक माहौल मिलेगा। इसमें छात्रों को एसी और वाई–फाई की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। विद्यार्थियों को सभी प्रकार की परीक्षाओं के लिए मार्गदर्शन दिया जाएगा। इस अवसर पर श्री विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य, श्री अशोक नारंग व श्री धीरज गुप्ता ने कहा कि इस पुस्तकालय की सीटें सीमित हैं तथा पुस्तकालय शुरू होनें से अब तक अनेक विद्यार्थी पंजीकरण करवा चुके हैं। यह पुस्तकालय मलोट क्षेत्र के लिए वरदान साबित होगा। ❒

शाहरुख खान लंदन में आदित्य चोपड़ा की कम फॉल इन लव-द डीडीएलजे म्यूजिकल रिहर्सल में शामिल हुए

बॉलीवुड की ब्लॉकबस्टर फिल्म पर आधारित म्यूजिकल के यूके प्रीमियर से पहले शाहरुख खान ने इतिहास रच दिया

वैश्विक सिनेमाई आइकन और आदित्य चोपड़ा निर्देशित ऐतिहासिक ब्लॉकबस्टर दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे (डीडीएलजे) के दिल की धड़कन शाहरुख खान ने लंदन में कम फॉल इन लव – द डीडीएलजे म्यूजिकल के रिहर्सल रूम का अचानक दौरा किया। 1995 की लोकप्रिय हिंदी रोमांटिक फिल्म का यह नया स्टेज रूपांतरण, जिसमें खान ने राज और काजोल ने सिमरन की भूमिका निभाई थी, 29 मई से 21 जून 2025 तक मैनचेस्टर ओपेरा हाउस में अपना यूके प्रीमियर करने के लिए तैयार है।

कम फॉल इन लव– द डीडीएलजे म्यूजिकल यूके और भारत में सेट है और इसका निर्देशन आदित्य चोपड़ा कर रहे हैं, जो रिकॉर्ड तोड़ने वाली, पुरस्कार जीतने वाली हिंदी भाषा की फिल्म के मूल निर्देशक हैं। डीडीएलजे भारतीय सिनेमा में सबसे लंबे समय तक चलने वाला शीर्षक है, जो 1995 में रिलीज होने के बाद से मुंबई में लगातार चल रहा है। डीडीएलजे इस साल अपनी 30वीं वर्षगांठ मना रहा है।

जेना पांड्या (सिमरन का किरदार निभा रही हैं) ने कहाः "शाहरुख खान से मिलना और उन्हें रिहर्सल रूम में बुलाना वाकई सम्मान की बात थी। उन्होंने शो के लिए अपना समय और समर्थन बहुत उदारता से दिया। उन्हें कुछ प्रतिष्ठित दृश्य दिखाने में सक्षम होना, जिसे उन्होंने और काजोल ने मूल रूप से स्थापित किया था, एक अविश्वसनीय एहसास था और यह मेरे लिए एक लंबे समय तक चलने वाली याद रहेगी। मैं अगले हफ्ते मैनचेस्टर जाने और इस कहानी को मंच पर पेश करने का बेसब्री से इंतजार कर रही हूँ!"

एशले डे (रोग का किरदार निभा रही हैं) ने कहा– जब वे हमारे रिहर्सल रूम में पहुंचे और पूरी कंपनी से मिले, तो यह एक ऐसा पल था जो चुपचाप हम सभी पर छा गया– एक तरह से खास जिसे शब्दों की जरूरत नहीं थी। सभी को उनका स्वागत करते हुए देखकर, मैं महसूस कर सकती थी कि यह कितना सार्थक था। उन्होंने हम सभी का इतने प्यार और हमारे द्वारा बनाए जा रहे काम के बारे में वास्तविक उत्साह के साथ स्वागत किया। मैं कल्पना नहीं कर सकती कि एक प्रोजेक्ट को – जिसे लाखों लोग पसंद करते हैं – 30 साल बाद एक संगीत के रूप में फिर से कल्पना करते हुए देखना कैसा लगता होगा। और फिर भी, वे और देखने के लिए कहते रहे! हमने निजी तौर पर जो शब्द साझा किए वे एक राज से दूसरे राज के लिए हैं – लेकिन मैं कहूंगी, वे बहुत खुश थे। यह एक अविश्वसनीय दोपहर थी। मैं इसे कभी नहीं भूलूंगी।

विशाल ददलानी ने कहा, शाहरुख का हमारे वर्कशॉप में आना हम

सभी के लिए एक आश्चर्यजनक सकारात्मक अनुभव था। राज ने रोग से मुलाकात की, ऐसा कहा जा सकता है! यह समय का कितना शानदार पल था। बेशक, हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्हें गाने, आवाज और प्रदर्शनों की ऊर्जा बहुत पसंद आई! उन्होंने रिहर्सल देखने के बाद हर एक व्यक्ति से मुलाकात की और उनसे बातचीत की और यहां तक कि अपने शुरुआती दिनों के संगीत–थिएटर के अनुभवों को फिर से जीया। यह कहना सुरक्षित है कि हमारे कलाकार और समूह हमेशा उनके साथ बिताए गए समय को संजो कर रखेंगे। हम सभी उम्मीद कर रहे हैं कि वह मैनचेस्टर में शानदार पैलेस ओपेरा हाउस में शो को वास्तव में उड़ान भरते हुए देखने के लिए आएंगे। शेखर रवजियानी ने कहा, कम फॉल इन लव के सेट पर शाहरुख खान का आना एक ऐसा सरप्राइज था जिसे पूरी कास्ट और क्रू हमेशा याद रखेगी! उनकी आभा और मौजूदगी के अलावा, असली 'राज' से मिलना सभी के लिए बेहद खुशी की बात थी। शाहरुख खान के लिए थिएटर का बहुत खास स्थान है क्योंकि उनके करियर की शुरुआत यहीं से हुई थी और कास्ट और क्रू का हर सदस्य थिएटर और कला के प्रति उनके सच्चे प्यार को महसूस कर सकता था। उनसे मिलने और उनके साथ बातचीत करने का अनुभव एक ऐसा पल है जो हमेशा उनके दिलों में रहेगा। कम फॉल इन लव – डीडीएलजे म्यूजिकल का यूके प्रीमियर मैनचेस्टर ओपेरा हाउस में गुरुवार 29 मई 2025 को होगा और यह शनिवार 21 जून 2025 तक चलेगा।

प्रसिद्ध हिट रोमांटिक–कॉमेडी फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे के स्टेज म्यूजिकल रूपांतरण में संस्कृतियों का टकराव होगा, जिसे प्रोडक्शन के लिए

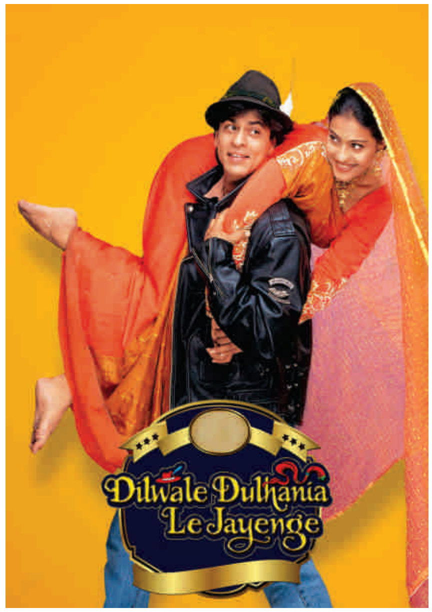

बनाए गए 18 नए अंग्रेजी गानों की शानदार धुन पर तैयार किया गया है।

इस संगीतमय कार्यक्रम में जेना पंड्या (भांगड़ा नेशन, मम्मा मिया) सिमरन की भूमिका में और एशले डे (एन अमेरिकन इन पेरिस, डायनेस्टी) रोग की भूमिका में नजर आएंगे, साथ ही इरविन इकबाल (द फादर एंड द एसेसिन) बलदेव की भूमिका में, कारा लेन (द एडम्स फैमिली) मिंकी की भूमिका में, हरवीन मान–नीरी (बेंड इट लाइक बेकहम) लज्जो की भूमिका में, अमोनिक मेलाको (ऑस्टेनलैंड) बेन की भूमिका में, मिल्ली ओश्कॉनेल (सिक्स) कुकी की भूमिका में, अंकुर सभरवाल (स्नेक्स एंड लैडर्स) अजीत की भूमिका में, किंशुक सेन (कम फॉल इन लव – द डीडीएलजे म्यूजिकल) कुलजीत की भूमिका में, रसेल विलकॉक्स (एग्जिट द किंग) रोग सीनियर की भूमिका में नजर आएंगे।

कलाकारों में एरिका–जेने एल्डन (ए क्रिसमस कैरोल– द म्यूजिकल), ताश बाकारेसे–हैमिल्टन (फ्रेंकी गोज टू बॉलीवुड), स्कारलेट बेहल (सिंड्रेला), सोफी कैम्बल (सिंगिन इन द रेन), गैब्रिएल कोका (फ्रोजन द म्यूजिकल), रोहन धूपर (मम्मा मिया!), जो जैंगो (ऑल इंग्लैंड डांस गाला), अलेक्जेंडर एमरी (लव नेवर डाइस), कुलदीप गोस्वामी (भांगड़ा नेशन), एला ग्रांट (वन्स अपॉन ए टाइम टूर), यास्मीन हैरिसन (बर्लेस्क), मोहित माथुर (बियॉन्ड बॉलीवुड), टॉम मुसेल (बर्लेस्क), पूर्वी परमार (लिटिल शॉप ऑफ हॉरर्स), साज राजा (बेस्ट ऑफ एनिमीज), मनु सारस्वत (केक द म्यूजिकल), गैरेट टेनेंट (मम्मा मिया!), सोन्या वेणुगोपाल (लाइफ ऑफ पाई), और झूले एमिली गुडइनफ (सनी आफ्टरनून), मरीना लॉरेंस–महरा (द सीक्रेट सिल्क), जॉर्डन मैसुरिया–वेक (पीटर पैन)।

कम फॉल इन लव– द डीडीएलजे म्यूजिकल के लिए पुरस्कार विजेता रचनात्मक टीम में नेल बेंजामिन (टीना फे के साथ मीन गर्ल्स, लॉरेंस ओश्कीफ के साथ लीगलली ब्लोंड के लिए ओलिवियर पुरस्कार विजेता) द्वारा पुस्तक और गीत, विशाल डडलानी और शेखर रवजियानी द्वारा संगीत (भारत में विशाल और शेखर के नाम से लोकप्रिय), रॉब एशफोर्ड द्वारा कोरियोग्राफी (टोनी, ओलिवियर और एमी पुरस्कार विजेता जिनके क्रेडिट में फ्रोजन, कैट ऑन ए हॉट टिन रूफ, ब्रॉडवे पर हाउ टू सक्सीड इन बिजनेस विदाउट रियली ट्राइंग शामिल हैं), सह–कोरियोग्राफी– श्रुति मर्चेंट द्वारा भारतीय नृत्य (लेडीज वर्सेस रिकी बहल, ताज एक्सप्रेस), डेरेक मैकलेन द्वारा दृश्य डिजाइन (दो बार टोनी पुरस्कार विजेता जिनके क्रेडिट में एमजे द म्यूजिकल और मौलिन रूज! संगीत निर्देशन बेंजामिन होल्डर द्वारा किया गया है। कास्टिंग डेविड ग्रिंड्रोड सीडीजी द्वारा ग्रिंड्रोड बर्टन कास्टिंग के लिए की गई है। ❐

कभी खत्म नहीं हो रही तलाश की प्रक्रिया

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई
संपर्कः 8355897893
ईमेल : k.vedasen@gmail.com

शरीर आराम की तलाश में और हालात पैसों की तलाश में। मन शांति और खुशी की तलाश में और दिल अपनों की तलाश में व्यस्त है। तलाश की प्रक्रिया कभी खत्म नहीं हो रही है। जीवन के अनुभव से यह सीखा है कि इच्छाएं बड़ी बेवफा होती हैं कमबख्त पूरी होते ही बदल जाती हैं। याद आता है अतीत का वह समय जब पर्स में पैसे थोड़े होते थे और खरीदारी की सूची लंबी होती थी फिर सस्ते के तलाश में पूरे बाजार की मटरगशती हो जाती थी। कभी दुखी होकर कभी जीतकर बुद्धू बनकर घर वापस आ जाते। इस पूरे सीनरियो में संतुलित करने के लिए जो ऊर्जा है उसे इमोशन कहते हैं। यह भी बड़ी बेपरवाह, बेवफा, दिल दिमाग को हमेशा झकझोरती रहती है। मन को अशांत कर गम के झील में उलझाए रखती है।

अब इस समस्या से निजात पाने के लिए जीवन शैली और थॉट प्रोसेस को नियंत्रित करने की कला सीखनी होगी। अक्सर अतीत की घटनाएं विचारों को प्रेरित करती रहती और कभी दुखी करती और कभी आनंद भी करवाती। अब यहां सोचना यह है कि जो गुजरे हुए समय में, गुजरी हुई परिस्थिति में घटनाएं घटी हैं उनसे वर्तमान में क्या लेना देना! उसको लेकर दुखी होना भी बेवकूफी है और खुश होना भी बेवकूफी है। वर्तमान के जीवन को, उपलब्धियां को ध्यान से जीवन में उतरने दिया जाए और आगे बढ़ते जाना है। इसी प्रक्रिया को ही जीवन शैली कहते हैं। हमें वर्तमान से नाता जोड़ना है, हर सुबह एक नई सुबह नई किरण के साथ जीने की चाह रखने वाले इस उलझन में नहीं उलझते हैं। इमोशन शरीर में भावनाओं और विचारों से आते हैं। क्रोध भी एक इमोशन है यह भी शब्दो का एक परिणाम है। बोलचाल की भाषा में शब्दों का चुनाव अत्यंत आवश्यक है। शब्दों के चुनाव के साथ–साथ शब्दों को व्यक्त करने की शैली या लहजा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अच्छे ही शब्द अगर हम कड़वाहट से बोले तो वह तीर की तरह चुभ जाते हैं। और नकारात्मक संवेग शरीर में, मन में, दिल में, दिमाग में आने लगते हैं और बदले की भावना एवं क्रोध की भावना का जंग छिड़ जाता है। इंसान खुद भी परेशान होता है और इन शब्दों के माध्यम से अगला को भी परेशान कर देता है। इसीलिए तो कहा गया है लोगों को खुश करना है तो तारीफ करना सीखो। तारीफ के शब्दों का खुशामदी भाषा में प्रयोग करो। और अगर अपने जीवन में तरक्की चाहते हो तो निंदा को गले लगाओ तो तुम्हारे व्यवहार में एक परिवर्तन आने का कौशल विकसित होगा और परिवर्तन ही जीवन के विकास की पहचान है। जो इंसान जितना परिवर्तनशील रहेगा, वातावरण को सामंजस्य में संतुलित करने की शक्ति रखेगा उसका जीवन उतना ही खुशहाल रहेगा। खुशी की तलाश जो इधर–उधर ढूंढने से नहीं मिलेगी बल्कि खुशी तो दिल और दिमाग के भीतर विद्यमान है सिर्फ उसे सर झुका कर देखने की आवश्यकता है। अपने जीवन शैली को बदलने की आवश्यकता है, यही तो जीवन जीने का तरीका है।

हर इंसान के जीवन में तनाव है, समस्याएं हैं, विरोध है, उलझने हैं, पर समय आने पर धीरे–धीरे सभी सुलझते जाते हैं। इसके लिए धैर्य की आवश्यकता है और प्रबंधन की कुशलता है। यहां पर यह देखा गया है प्रबंधन कुशलता हर इंसान में एक मौखिक तौर पर है और एक प्रायोगिक तौर पर है। मौखिक तौर पर जो प्रबंधन कुशलता है वह कुशलता तो है पर वह सफल नहीं है क्योंकि इस जीवन में उतारा नहीं गया सिर्फ उसके उपदेश दिए गए तो आप जब भी अपनी समस्याओं में उलझ जाते हैं तो उसका एक प्रबंधन करें अगर खुद से नहीं प्रबंधन हो पाता है तो किसी काउंसलर की सलाह लें। हर समस्या को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करें जिसके कारण समस्याएं सकारात्मक रूप में सुलझती चली जाएंगी। ❐

गर्मियों में बनाएं अलग-अलग फ्लेवर के शीतल पेय

किरण उपाध्याय
रेसिपी एक्सपर्ट

हम गर्मियों में लू से और गर्मी से बचने के लिए रोजमर्रा पीए जाने वाले पेय बनाएंगे।

हम यह पेय हमारे घर में जो सामग्रियां हमेशा रहती हैं उसी से बनाएंगे।

नमकीन छाछ

सबसे पहले हम एक कटोरी धनियां पत्ती, एक चौथाई कटोरी पुदीने की पत्ती को मिक्सी में डालकर पीस लेंगे और उसमें आधा नींबू का रस मिलाकर फ्रीज में एयर टाइट डब्बे में स्टोर करके रख सकते हैं। जब हमें आवश्यकता हो हम निकाल कर उपयोग में ला सकते हैं।

अब हम नमकीन छाछ बनाएंगे। एक ग्लास में तीन चौथाई दही ले लेंगे और एक चौथाई पानी मिला लेंगे। अब हम उसमें पुदीना– धनियां–पत्ती नींबू के मिश्रण वाली चटनी एक चम्मच मिला लेंगे, सेंधा नमक स्वाद अनुसार, काला नमक, भुना हुआ जीरा पाउडर, दो चुटकी चाट मसाला मिलाकर मथनी या मिक्सी में डालकर अच्छी तरह से मिला लेंगे और एक चुटकी भुना जीरा पाउडर डालकर सर्व करेंगे।

सत्तू का पेय

अब हम गर्मियों में सर्वाधिक पीने वाला सत्तू का पेय बनाएंगे।

एक ग्लास में हम चार बड़े चम्मच सत्तू (चना का) लेंगे। उसमें धीरे–धीरे पानी मिलाऐंगे और चलाते रहेंगे इससे गुठलियां नहीं पड़ेंगी। अब हम इसमें आवश्यकता अनुसार सेंधा नमक, काला नमक, दो चुटकी भुना जीरा पाउडर, आधा नींबू का रस, एक चम्मच धनियां, पुदीना, नींबू की चटनी, बारीक कटा प्याज और बारीक कटी हरी मिर्च, चाट मसाला डालकर मिलाकर सर्व करेंगे।

अगर हम मीठा सत्तू पीना चाहते हैं तो हम सत्तू में दूध, चीनी, ड्राई फ्रूट्स और बर्फ डालकर मिला लेंगे। यह पेय भी बहुत स्वादिष्ट लगता है।

खीरे का पेय

अब हम खीरे का पेय बनाएंगे।

हम खीरे को छीलकर छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर मिक्सी में डालकर पीस लेंगे। उसे छन्नी की मदद से छान लेंगे। अब हम एक ग्लास में खीरे का जूस, कुछ बर्फ के टुकड़े, पानी, चीनी या सेंधा नमक, काला नमक, आधा नींबू का रस, धनियां–पुदीना– नींबू की चटनी एक छोटा चम्मच, भुना जीरा पाउडर एक चुटकी, एक चुटकी चाट मसाला डालकर सर्व करेंगे।

नींबू का पेय

एक ग्लास में चार बड़े चम्मच चीनी या स्वाद अनुसार, एक नींबू का रस ,पुदीना –धनिया– निंबू की चटनी एक–चम्मच ,एक चुटकी काला नमक, एक चुटकी चाट मसाला, बर्फ के टुकड़े डाल कर सर्व करेंगे।

आम का पन्ना

चार से पांच कच्चे आम को कुकर में पानी के साथ एक सीटी आने तक उबाल लेंगे। हम एक आम का गूदा निकालकर मिक्सी में डालेंगे। मिक्सी में एक चम्मच चीनी, सेंधा नमक, काला नमक, चाट मसाला, दो चुटकी भुना जीरा पाउडर, एक छोटा चम्मच धनिया–पुदीना–नींबू की चटनी मिलाकर चला लेंगे और सर्व करेंगे। बाकी बचे आम को हम फ्रिज में रख देंगे और आवश्यकता अनुसार उपयोग में लेंगे।

यह सभी सामग्री दही, सत्तू, नींबू ,खीरा ,कच्चे आम गर्मियों में लगभग सभी के घर पर हमेशा ही रहते हैं। अतः उपरोक्त पेय हम रोज पी सकते हैं। ❐

युद्ध के साये में तिलमिला रही दुनिया

✍ **सुनील कुमार महला**
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

आज पूरी दुनिया बारूद के ढ़ेर पर खड़ी हुई है और ऐसा नजर आता है कि आज विश्व में हर तरफ आग, बारूद और युद्ध का साया मंडरा रहा है। वास्तव में यह मानवता पर एक बड़ा खतरा है। कहना गलत नहीं होगा कि दोनों कट्टरपंथी देशों ईरान और इजरायल में आपसी तनातनी के साथ ही अब विश्व में तीसरे विश्व युद्ध की आहट शुरू हो गई है। पाठकों को बताता चलूं कि हाल ही में 13 जून 2025 को इजरायल ने ईरान पर एक बड़े सैन्य ऑपरेशन राइजिंग लॉयन के तहत हवाई हमला किया। गौरतलब है कि ऑपरेशन राइजिंग लॉयन में दर्जनों इजरायली लड़ाकू विमानों ने ईरान के परमाणु ठिकानों, मिसाइल कारखानों और टॉप सैन्य कर्मियों को निशाना बनाया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस हमले में ईरान के छह शीर्ष परमाणु वैज्ञानिकों सहित कई सैन्य कमांडर मारे गए। दूसरी तरफ, ईरान ने भी एक नई सैन्य रणनीति अपनाते हुए सीरिया और इराक में मौजूद इजराइली ठिकानों को टारगेट किया है। ईरानी मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, ईरानी ड्रोन और मिसाइलों ने गुप्त सैन्य अड्डों को निशाना बनाया, जिनमें से कुछ पर भारी क्षति की पुष्टि हुई है। कहना गलत नहीं होगा कि ईरान–इजरायल के एक दूसरे पर हमलों से पश्चिम एशिया में संघर्ष का एक और मोर्चा खुल गया है। कहना गलत नहीं होगा कि मध्य पूर्व में हालात बहुत गंभीर होते जा रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय समुदाय, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र और यूरोपीय यूनियन, ने दोनों देशों से संयम बरतने की अपील की है। इजराइल के भीतर भी सुरक्षा विशेषज्ञों ने चेताया है कि अगर यह युद्ध जारी रहा तो यह फुल–स्केल रीजनल वॉर में बदल सकता है। कहा जा रहा है कि ईरान ने परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) के प्रविधानों का उल्लंघन किया है। जानकारी के अनुसार ईरान यूरेनियम का शोधन कम करने के लिए तैयार नहीं है। यह माना जा रहा है कि इजरायल इन हमलों के जरिए ईरान के परमाणु कार्यक्रम को बाधित करना चाहता है, जिससे उसे परमाणु हथियार बनाने से रोका जा सके। नतांज स्थित परमाणु संयंत्र को विशेष रूप से निशाना बनाया गया, क्योंकि यह ईरान के परमाणु कार्यक्रम का केंद्र है।हालांकि, ईरान ने परमाणु हथियार बनाने की बात से इनकार किया है और इजरायल पर आक्रमण और तोड़फोड़ का आरोप लगाया है। ईरान ने हिजबुल्लाह और हमास जैसे आतंकी गुटों के जरिए गहरा रीजनल नेटवर्क तैयार किया और इन गुटों को इजरायल अपनी सुरक्षा के लिए सीधा खतरा मानता है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि यह बात कही जा रही है कि ईरान का परमाणु हथियार हासिल करने का कार्यक्रम अब अपने निर्णायक और अंतिम दौर में पहुंच चुका है। संयुक्त राष्ट्र की परमाणु संवर्धन पर निगरानी रखने वाली एजेंसी ने अपनी हालिया एक रिपोर्ट में यह बात कही है कि ईरान के पास 408 किलो यूरेनियम का ऐसा भंडार है, जो कि 60 फीसदी तक संवर्धित है। वहीं, 133 किलो यूरेनियम 50 फीसदी तक संवर्धित है। यहां यह गौरतलब है कि परमाणु हथियार बनाने के लिए यूरेनियम के 90 फीसदी संवर्धन की जरूरत होती है।

वहीं नेतन्याहू का यह दावा है कि इस वक्त ईरान के पास जितना संवर्धित यूरेनियम है, वो नौ परमाणु बन बनाने के लिए पर्याप्त है। वास्तव में यह कहा जा रहा है कि इसमें से एक तिहाई का उत्पादन पिछले तीन महीने में ही किया गया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि नेतन्याहू ने ईरान पर आरोप लगाया कि वह वैश्विक चेतावनियों को नजरअंदाज करके अपने परमाणु हथियार कार्यक्रम को आगे बढ़ा रहा है। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का यह साफ कहना है कि इस अभियान को शुरू करने का मकसद ईरान के परमाणु और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रमों से पैदा हो रहे खतरे को खत्म करना है। दोनों देशों के बीच युद्ध को थामने के लिए अब अंतरराष्ट्रीय अपीलें शुरू हो चुकी हैं और ब्रिटेन के साथ ही भारत ने भी शांति की मांग की है। दरअसल, भारत दोनों ही देशों ईरान और इजरायल का मित्र राष्ट्र है। भारत दोनों देशों के बीच हुए इस टकराव को लेकर बेहद चिंतित है और उसने दोनों देशों से संयम बरतने की अपील की है और भारत इन दोनों के बीच तनाव कम करने के लिए हरसंभव प्रयास भी कर रहा है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि दोनों देशों के बीच तनाव के कारण कहीं न कहीं भारत पर भी इसका प्रभाव पड़ा है। दरअसल, ईरानी एयरस्पेस के बंद हो जाने के कारण भारत की अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर इसका प्रभाव पड़ा है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार दिल्ली से यूरोप और अमेरिका की उड़ानों को अब वैकल्पिक रूटों से होकर जाना पड़ रहा है। एयर इंडिया और इंडिगो जैसी कंपनियों को अपनी 16 फ्लाइटों के मार्ग बदलने पड़े हैं। इससे यात्रा का समय बढ़ने के साथ–साथ संचालन खर्च में भी वृद्धि हुई है। यह बहुत ही दुखद है कि दोनों देशों

के बीच जहन्नुम बना देंगे वर्सेज जला देंगे तेहरान जैसी डायलॉगबाजी हो रही है और इधर अमेरिका डील–डील का खेल, खेल रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भी दोनों देशों के बीच घटनाक्रम पर तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने टुथ सोशल पर यह पोस्ट कर ईरान को चेतावनी दी है कि यदि उसने अब भी परमाणु समझौते की ओर कदम नहीं उठाया तो कुछ भी नहीं बचेगा। उन्होंने आगे कहा कि अमेरिका और इजरायल मिलकर आगे और भी क्रूर हमले कर सकते हैं। वास्तव में उनका यह बयान अंतरराष्ट्रीय तनाव को और बढ़ाने वाला साबित हो सकता है। व्हाइट हाउस ने इशारा दिया है कि अगर हमला परमाणु सुविधाओं तक सीमित नहीं रहता, तो अमेरिका डायरेक्ट इन्वॉल्वमेंट की योजना बना सकता है। बहरहाल, यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि इस संघर्ष का सबसे ज्यादा असर आम नागरिकों और क्षेत्रीय व्यापार पर पड़ा है। तेल की कीमतों में भारी उछाल देखा गया है, जिससे वैश्विक बाजारों में चिंता है। दोनों देशों के बीच शांति को लेकर ईरान की राजधानी तेहरान और इजराइल के तेल अवीव में हजारों लोगों ने प्रदर्शन भी किए हैं। बहरहाल, इन घटनाओं ने एक बार फिर यह सवाल खड़े कर दिये हैं कि क्या हम 21वीं सदी में विकास की ओर बढ़ रहे हैं या विनाश की ओर? आज संपूर्ण विश्व विनाश के मुहाने पर खड़ा हुआ है। जिधर देखो उधर संघर्ष और युद्ध की आग फैली हुई है। कोई हथियारों की अंधी दौड़ में लगा है तो कोई अपनी विस्तारवादी नीतियों को अंजाम देने में लगा हुआ है। युद्ध किसी भी देश को बहुत साल पीछे धकेल देते हैं और विनाश को जन्म देते हैं। आज विश्व में पहले से ही बहुत सी समस्याएं मौजूद हैं, जिनका विश्व लगातार सामना कर रहा है। मसलन, आज संपूर्ण विश्व ग्लोबल वार्मिंग, भुखमरी(खाद्य असुरक्षा) , गरीबी, आर्थिक अस्थिरता, महंगाई और बेरोजगारी जैसी अनेक समस्याओं से जूझ रहा है। युद्ध विभिषिका को जन्म देते हैं और पूरी मानवता के लिए एक बड़ा और गंभीर खतरा हैं। वास्तव में इस समय दुनिया को हथियारों और युद्ध की नहीं, अपितु शांति,संयम और आपसी सहयोग की जरूरत है। वास्तव में आज का युग विज्ञान और तकनीक का युग है और विज्ञान और तकनीक का उपयोग जीवन बचाने और जीवन सुधारने में होना चाहिए, न कि उसे नष्ट करने में। आज हर तरफ युद्ध है, संघर्ष ही संघर्ष है, ऐसे में जरुरत इस बात की है कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय युद्ध की जगह संवाद को अपनाए। वास्तव में संयुक्त राष्ट्र जैसे वैश्विक मंचों को अधिक प्रभावी और निष्पक्ष भूमिका निभानी चाहिए। आज के समय में वैश्विक शांति बहुत ही जरूरी है। शांति और संयम से ही दुनिया में सबकुछ संभव हो सकता है। अंत में यही कहूंगा कि युद्ध या हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। कहना गलत नहीं होगा कि विश्व का वर्तमान परिदृश्य भगवान बुद्ध की शिक्षाओं पर फिर से विचार करने का उपयुक्त समय है जो शांति, सद्भाव और स्थिरता की दिशा में एक मार्गदर्शक प्रकाश के रूप में कार्य कर सकता है।❐

बोलो ज़िंदगी

पत्रिका में विज्ञापन के लिए हमसे संपर्क करें।

Mob.: 7903935006 / 9122113522

E-mail : bolozindagi@gmail.com

प्रज्ञन स्कूल ऑफ म्यूजिक : पटना के युवाओं के लिए एक संगीतमय यात्रा

प्रज्ञन स्कूल ऑफ म्यूजिक, पटना का एक प्रतिष्ठित संगीत और कला अकादमी है, (पटना के बुद्धा कॉलोनी में स्थित) जहाँ बच्चों और युवाओं को संगीत और सांस्कृतिक गतिविधियों की सच्ची शिक्षा दी जाती है।

इस संस्था की स्थापना का उद्देश्य सिर्फ हुनर सिखाना नहीं, बल्कि उनमें कला के प्रति गहरी समझ और सम्मान पैदा करना है। यहाँ गिटार, वोकल (गायन), कासियो (कीबोर्ड), वेस्टर्न डांस, क्लासिकल डांस, कराटे और फाइन आर्ट्स (चित्रकला आदि) की समर्पित रूप से ट्रेनिंग दी जाती है।

इस अकादमी के निदेशक प्रकाश शरण हैं, जो स्वयं एक कुशल गिटारिस्ट हैं। उन्होंने अपना सम्पूर्ण समर्पण पटना के युवाओं को संगीत की सच्ची परिभाषा सिखाने में लगा दिया है। उनका मानना है कि आज की युवा पीढ़ी को संगीत केवल एक कोर्स या हॉबी के रूप में नहीं, बल्कि आत्मा की भाषा के रूप में समझना चाहिए। वे बच्चों को संगीत के जरिए अनुशासन, समर्पण और भावनात्मक अभिव्यक्ति सिखाते हैं। प्रज्ञन स्कूल ऑफ म्यूजिक की सबसे ख़ास बात यह है कि यहाँ हर विद्यार्थी को व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता है। चाहे वह नृत्य में रुचि रखता हो या संगीत में, या फिर फाइन आर्ट्स में द् हर कला के क्षेत्र में विशेषज्ञ शिक्षकों द्वारा बच्चों को सिखाया जाता है। इसके साथ ही कराटे जैसी शारीरिक गतिविधि भी शामिल की गई है, जिससे विद्यार्थियों का मानसिक और शारीरिक संतुलन बना रहे।

प्रज्ञन स्कूल ऑफ म्यूजिक एक ऐसा मंच है जहाँ कला और शिक्षा को एक साथ जोड़ा गया है। यहाँ का वातावरण सकारात्मक, प्रेरणादायक और रचनात्मक होता है, जिससे बच्चे न सिर्फ कलाकार बनते हैं, बल्कि एक अच्छे इंसान भी बनते हैं। प्रकाश शरण और उनकी टीम इस बात का पूरा ध्यान रखती है कि हर विद्यार्थी अपनी कला में निपुण होने के साथ–साथ संस्कारों और अनुशासन का पालन भी करे।

अगर आप चाहते हैं कि आपका बच्चा कला के क्षेत्र में कुछ विशेष सीखे और समझे, तो प्रज्ञन स्कूल ऑफ म्यूजिक आपके लिए सबसे सही जगह है। यहाँ न सिर्फ शिक्षा मिलती है, बल्कि एक बेहतर भविष्य की नींव भी रखी जाती है। संगीत, नृत्य और कला के जरिए।